

वर्ष : 2020



अंक : 39वाँ

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नवविकिरण

(अर्द्धवार्षिक)



महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय, हरियाणा, चण्डीगढ़

हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 38वें अंक का विमोचन



हिन्दी कार्यशाला वर्ष 2020





Dedicated to Truth in Public Interest

‘ उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में
स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश
के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो,
अर्थात् हिन्दी ।’

नवकिरण

वर्ष : 2020

अंक : 39वां

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय,
हरियाणा, चण्डीगढ़

बहुत सहज अभिव्यक्ति है हिंदी
हर देशवासी की भाषा है हिंदी

नवकिरण परिवार

पत्रिका का नाम	:	नवकिरण
प्रकाशन की अवधि	:	अर्द्धवार्षिक
वर्ष	:	2020
अंक	:	39वां
संरक्षक	:	सुश्री विनीता मिश्रा, महालेखाकार
प्रकाशन	:	श्री राजाशेकर, उप-महालेखाकार
प्रबन्धन	:	श्री अवनीश कुमार, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
सम्पादक	:	सुश्री पूजा सिंह मण्डल, हिन्दी अधिकारी
सह-सम्पादक	:	श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
	:	श्री विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक
प्रकाशन स्थल	:	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, लेखा भवन, प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33-बी, चण्डीगढ़।
मूल्य	:	पाठकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा



संदेश



कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। विभागीय पत्रिकाएं हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ-साथ कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को भी मंच प्रदान करती हैं।

हमारा देश विभिन्न संस्कृतियों से सजा हुआ है। इस सांस्कृतिक विविधता में एकता की सूत्र हमारी हिन्दी भाषा है। यह भारत की सर्वोत्कृष्ट संपर्क भाषा है और देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली एवं समझी जाती है। हिन्दी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उद्योग, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है। सभी को अपने कार्य-व्यवहार में राजभाषा हिन्दी के आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर अधिक से अधिक बल देना चाहिए, ताकि सामान्य नागरिकों तक सरकारी नीतियों/कार्यक्रमों की जानकारी पहुँच सके।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक एवं इसके प्रति जागरूकता का वातावरण बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु रचनाकार व संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

विशाल बंसल

(विशाल बंसल)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

हरियाणा, चण्डीगढ़।

संदेश



मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति, अभिरूचि और जागरूकता बढ़ाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा। कार्यालय के सभी कर्मचारियों/अधिकारियों को हार्दिक बधाई। आशा है कि आप सब अपना सहयोग इसी प्रकार देते रहेंगे।

भारत में राजभाषा हिन्दी जन-साधारण से जुड़ने की एक महत्वपूर्ण कड़ी है एवं इसे अपने कार्यालयीन कार्य में शामिल किए बिना हम प्रगति नहीं कर सकते हैं। कार्यालय में कर्मचारियों एवं अधिकारियों से राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा बढ़ाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। पत्रिकाएं हमें कार्यालय की विभिन्न गतिविधियां एवं कार्यकलापों से अवगत करवाने के साथ ही हिन्दी भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। 'नवकिरण' पत्रिका भी इस दिशा में सहायक सिद्ध होगी। यह पत्रिका साहित्यिक एवं रचनात्मक मूल्यों के प्रति सदैव समर्पित है।

मैं पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

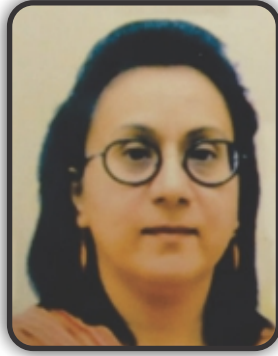
फैसल

फैसल इमाम

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

हरियाणा, चण्डीगढ़

संदेश



मुझे यह जानकारी हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक का प्रकाशन शीघ्र ही होने जा रहा है। इस सम्बन्ध में मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएं। वर्तमान में वैश्विक महामारी के कारण सामाजिक दूरी बनाना आवश्यक हो गया है। अतः इस सम्बन्ध में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन एवं पठन-पाठन और अधिक आवश्यक हो जाता है क्योंकि कार्यालयीन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से कार्यालय में रचनात्मक वातावरण का निर्माण तो होता ही है, साथ ही कार्यालयीन घटनाओं एवं कर्मचारियों के मनोभावों का भी पता चलता है। मैं यह कामना करती हूँ कि 'नवकिरण' का यह अंक भी अपने पूर्व अंकों की भांति राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं इसके प्रति अभिरूचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

पूनम पाण्डेय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

पंजाब, चण्डीगढ़



संदेश



मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ है कि आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इसके लिए मैं पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

राजभाषा हिन्दी पूरे देश को जोड़ने का माध्यम है। भारतीय संस्कृति, सभ्यता और विचारधारा को हिन्दी सहजता से अभिव्यक्त करती है। संवैधानिक दायित्वों के सम्यक निर्वहन के लिए आवश्यक है कि हमारा मूल कामकाज हिन्दी में हो। हिन्दी की प्रगति एवं उन्नति की यात्रा में हमारा समर्पण एवं निष्ठा अपेक्षित है। यही हमारा कर्तव्य है और दायित्व भी है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक इस उद्देश्य की ओर हमारा सुदृढ़ कदम होगा।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुशील

सुशील कुमार ठाकुर
प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा)
(केन्द्रीय) चण्डीगढ़

संदेश



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की पत्रिका 'नवकिरण' के 39वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी पत्रिकाओं का राजभाषा के प्रचार - प्रसार में अतुलनीय योगदान रहा है। कार्यालयी हिन्दी पत्रिकाएं न केवल पाठकों एवं रचनाकारों के बीच सम्पर्क का कार्य करती हैं बल्कि अन्तर कार्यालयी सम्पर्क को भी बढ़ाती हैं। आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' का प्रकाशन निश्चित रूप से राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारी/कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

(समर कांत ठाकुर)
महानिदेशक, लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएं)
चण्डीगढ़।

संदेश



मुझे हर्ष है कि आपका कार्यालय हिंदी पत्रिका नवकिरण का 39 वां अंक प्रकाशित करने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से संबंधित सभी रचनाकारों, पाठकों तथा संपादन सहयोगियों को हार्दिक साधुवाद देता हूँ।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाएं सदैव महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। हिंदी पत्रिका के माध्यम से विभागीय प्रतिभाएं प्रकाश में आती हैं तथा कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए सार्थक वातावरण तैयार होता है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी पत्रिका नवकिरण अपने उद्देश्य में पूर्णतया सफल रहेगी।

एक बार फिर नवकिरण के सभी लेखकों, पाठकों तथा संपादक मंडल के सभी सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं तथा बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

होवैदा

(होवैदा अब्बास)

महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

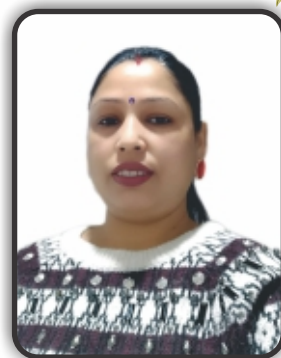
पंजाब, यू. टी., चण्डीगढ़ ।

अनुक्रमणिका

क.सं.	विवरण	लेखक सर्व श्री/सुश्री	पृष्ठ सं.
1.	संपादकीय	पूजा सिंह मंडल	1
2.	प्रतिक्रियाएं		2
3.	गृह मंत्री का संदेश		7
4.	वार्षिक कार्यक्रम		9
5.	राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका	डॉ सुमीत जैरथ	11
6.	राजभाषा अधिनियम/नियम	पूजा सिंह मंडल	17
7.	राजभाषा हिंदी का उद्देश्य	संजीव कुमार	20
8.	तनाव	अशोक कुमार	21
9.	जीने का गुर	नीतू सिंह	22
10	हिंदी की ओर	अंकित कुमार ठाकुर	23
11	जीवन की सांझ	तजिन्द्र सचदेवा	25
12	बीस कदम	अनिल कुमार शर्मा	35
13	गजलें	मनजीत कौर	37
14	हिंदी की व्यथा	विनय कुमार गर्ग	39
15	कुदरत का कहर –कोरोना	नरेन्द्र कुमार	40
16	आज सुबह	राजेश कुमार शर्मा	41
17	हिंदी हमारी मातृ भाषा	पंकज अरोड़ा	42
18	मजदूर दिवस	मिनेश कुमार	44
19	ख्वाबों की दौड़	दरवेश राही	45
20	हिंदी की प्रगामी रिपोर्ट	अवनीश कुमार	46
21	गतिविधियों की झलक	तरसेम कुमार	48
21	हिंदी दिवस का प्रतिवेदन	संजीव कुमार	53
22	प्रशासनिक शब्दावली	संजीव कुमार	55
23.	सेवानिवृत्ति/श्रद्धांजलि	रंजीव सिंह	57 / 59

संपादकीय

पूजा सिंह मंडल
हिन्दी अधिकारी



भाषा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी स्वरूप है। भाषा के अभाव में सामाजिकता, राष्ट्रीयता का महत्व नहीं रह जाता है। किसी भी राष्ट्र, राज्य या व्यक्ति जो भी हो अपने आपसी व्यवहार व भावों की अभिव्यक्ति प्रगट करने के लिए एक ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं, जिसे वह दोनों ही आसानी से समझ व बोल सकें। भाषा किसी भी समाज की पहचान तथा उसका अविभाज्य अंग होती है। भाषा के विकास के कारण ही मानव सुसभ्य और सुसंस्कृत हो पाया है। हिन्दी भाषा में साहित्य की भरमार है। हिन्दी भाषा अपने आप में बहुत ही वृहद् एवं समृद्ध है। यह समाज में संप्रेषण का सबसे सरल माध्यम है।

गांधी जी ने तो अपनी पुस्तक 'मेरे सपनों का भारत' में लिखा है कि हमें भारत की स्वाधीनता के साथ साथ राजभाषा, राष्ट्रभाषा अथवा संपर्क भाषा के रूप में किसी भी भारतीय भाषा को प्रतिष्ठित करना होगा। पूरे देश के दौरे के पश्चात् गांधी जी ने यह निष्कर्ष निकाला कि हिन्दी ही एक ऐसी भाषा हो सकती है जिसे हम राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित कर सकते हैं।

संविधान सभा ने लंबी चर्चा के बाद 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। राजभाषा हिन्दी हमारे देश की पहचान एवं गौरव है जो हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहिका एवं परिचायक भी है। हिन्दी एक ऐसी सहज सरल वैज्ञानिक भाषा है जिसे बहुत ही सरलता के साथ कोई भी व्यक्ति लिख, पढ़, बोल या समझ सकता है।

राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार करने तथा इसकी महत्ता को दर्शाने हेतु सभी कार्यालय अपने-अपने स्तर पर प्रयास करते हैं। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए हमारे कार्यालय की वार्षिक पत्रिका नवकिरण का 39 वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। "नवकिरण" हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की एकता एवं रचनात्मकता का प्रतीक बनती जा रही है। इस पत्रिका में हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के लेखों, कविताओं के माध्यम से उनकी मनोभावना का चित्रण किया गया है। यह हम सबके लिए गर्व की बात है कि हिन्दी के प्रति रुझान पैदा करने में "नवकिरण" पत्रिका एक सशक्त भूमिका निभा रही है।

पत्रिका को दोषरहित बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। पत्रिका को और अधिक पठनीय और रुचिकर बनाने में आपके सुझाव सहर्ष आमंत्रित करती हूँ।

जय हिन्द

प्रतिक्रियाएँ



कार्यालय
महालेखाकार (ले. व. ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं० हि०अ० / पत्रिका समीक्षा / 2020-21 / 76

दिनांक:-28/08/2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी / हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार)
हरियाणा, प्लॉट नं० 4 व 5, सेक्टर 33-बी
गन्धीनगर-160020

विषय: हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 38 वें अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय को हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 38 वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई है।
विशेष प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं जानकारीपूर्ण हैं। हिन्दी भाषा की सुव्यवस्थितता के अन्तर्गत आपका यह
प्रयत्न सराहनीय है जिसके लिये आपका वचनपूर्ण धन्यवाद है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002



OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
JHARKHAND, RANCHI - 834002

पत्रांक- हि.प्र.ले.प./2020-21/50

दिनांक-09/09/2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी
महालेखाकार (ले. व. ह.) का कार्यालय
हरियाणा, प्लॉट नं० 4 व 5, सेक्टर 33-बी
गन्धीनगर-160020

विषय: हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 38 वें अंक की प्राप्ति का प्रेषण।
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'नवकिरण' के 38 वें अंक की प्राप्ति हुई है।
पत्रिका का आकार पृष्ठ बढ़ा ही आवश्यक बना है एवं पत्रिका में प्रिण्टित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उत्कृष्ट
श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के
उत्कृष्ट भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी प्रकोष्ठ)



महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (Au. - I),
ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2020-21/70

दिनांक-14.09.2020

सेवा में,

वरि. लेखा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.),
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी
चंडीगढ़ - 160020

विषय:- हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 38वें अंक की पावती के संबंध में।

आपके पत्र सं.- हि.क./न.कि./2020-21/236, दिनांक- 07.07.2020 के साथ कार्यालय की पत्रिका "नवकिरण" के 38वें अंक की प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। कुछ रचनाएं जैसे- "अब गंधे बोलेंगे", "जल है तो कल है", "हिंदी दिवस" एवं "बटवारा" अत्यंत रोचक हैं। पत्रिका में दशरथी गई कार्यालयी गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और मनमोहक बनाते हैं।

पत्रिका की प्रगति की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी

रा.भा.अ./एच-11005/02/2020-21/17



संख्या / No.

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) राजस्थान
जयपुर, जयपुर-302005
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT-BRAGASTHAN
JANPATIAJIPUR-302005

दिनांक / Date 20-08-2020

वरि. लेखा अधिकारी (हि.क.),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हरिबाग, लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चंडीगढ़-160020

विषय:- हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 38 वें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय,

कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 38 वें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता की मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका का मुख्य सन्देश कोटि पर है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
राजस्थान



भारत सरकार/GOV. OF INDIA
आयकर विभाग/INCOME TAX DEPARTMENT
असह, नगर लक्ष्मण कार्पकपन समिति एवं

प्रधान मुख्य आयकर अधिकारी, उ.प्र. क्षेत्र, आयकर भवन, चण्डीगढ़-160017
O/o The Chairman TOLIC & Pr. Chief Commissioner of Income Tax (NWR) Ayakar Bhawan, Sector-37-E, Chandigarh
प्र.सं. लक्ष्मण/28/नगरकास प. प्रति/2020-21/ 1870 दिनांक: 01.09.2020

सेवा में,

श्री. लेखा अधिकारी (हि.क.),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदार), हरियाणा
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सेक्टर 33-बी,
चण्डीगढ़-160 020

विषय : हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" का अंक -

महोदय,

आपकी हिन्दी गृह पत्रिका "नवकिरण" के 38^{वें} अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानी एवं कविताएं रोचक व जानकारीपूर्ण हैं। और निराला महाराज प्रताप, नैतिक मूल्यों का पतन, 'डायबटीज/पथुले' तथा 'जल है तो कल है' आदि ज्ञानवर्धक लेख हैं तथा 'अब एके कोलेंगे, सब वहीं रह जायेंगे' तथा 'इन्डिक्टेड' सामाजिक व्यवस्था/कुरीतियों पर करार व्यंग्य है। इसके अलावा शिक्षा वही सबको है; दोस्ती, प्रार्थना, गौ, पहलवान, चंदबारा, मछल (मन्नाल) आदि कविताएं भी रोचक व पठनीय हैं।

कार्यालय में समय-समय पर आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों जैसे आपका प्रबंधन प्रशिक्षण 2019, रक्तदान शिविर 2019, वार्षिक कार्यक्रम 'आगाज' 2019, सार्वजनिक स्वास्थ्य सप्ताह (स्वास्थ्य समारोह) इत्यादि कार्यालय की अन्य सामाजिक गतिविधियों की जानकारी भी मिली जो कि सराहनीय है।

"नवकिरण" अपने नाम को सार्थक करते हुए राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना परचम लहराती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

(नीना मलहोत्रा)

सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं
सचिव, नगरकास चण्डीगढ़:

दूरभाष/टेलिफैक्स: 2223255,
2223566, 2224802



टेलीफैक्स/ Fax: 0612-2229977
TELEGRAM: ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हिन्दी कल/लेखा/रा०भा०/2020-21/ 32
दिनांक 27/08/2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी कुब.),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले० व ह०),
लेखा भवन, प्लॉट नं० 4 व 5,
सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़,
हरियाणा - 160020

विषय :- हिन्दी कार्यालय पत्रिका "नवकिरण" के 38^{वें} अंक की एक प्रति
प्राप्त के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक सं०:-
हि०क०/न०कि०/2020-21/236 दिनांक 27/07/2020 द्वारा हिन्दी कार्यालय
पत्रिका "नवकिरण" के 38^{वें} अंक की एक प्रति सन्मन्वय प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का लुक सुभाव्य है। उसका
बाहरी रंग रूप ही नहीं, अंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। श्री नील सिंह
की कविता "दहलीज", श्रीमती मलजित शर्मा 'मीरा' की 'मजलें', श्री विनय
कुमार गर्ग की कविता 'जल है तो कल है' एवं श्री सुभाष शर्मा का लेख 'अब
जधे भी कोलेंगे' कल्पित रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र
हैं।

पत्रिका के वेब संकलन हेतु संपादक अंडल बघाई के पात्र हैं।
पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना
है।

भवदीय,

(हिन्दी कल)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक-राजभाषा कक्ष /पत्रिका समीक्षा/के-1/ 2019-20/

दिनांक- 31/07/2020

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हक.)
हरियाणा, लेखा भवन प्लाट नं. 4 व 5 सेक्टर 33 बी,
चंडीगढ़-160020

विषय-हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 38 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में
सन्दर्भ- हि.क./ न कि/2020-21/236 दिनांक 07.07.2020

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 38 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका हिंदी के प्रचार प्रसार में महती भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया श्री कुमार शर्मा 'अनिल' का लेख "सूबसूरत", श्रीमती मंजीत शर्मा 'मीरा' की कविता "गजले", श्री राजेश पंजाब का लेख "नैतिक मूल्यों का पतन" एवं श्री संजीव कुमार शर्मा की कविता "हिंदी दिवस" विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

कल्याण अधिकारी

(राजभाषा कक्ष)



संख्या फि.क. 20/20/ पत्रिका समीक्षा/20
No. 129
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
बीरचन्द 'पटेल मार्ग', पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001
दिनांक/Date : 09/08/2020

शेखर में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हि.क.)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) हरियाणा,

लेखक भवन, प्लाट नं. 4 व 5, सेक्टर 33 -बी, चंडीगढ़-160020

विषय- हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 38 वें अंक का प्रतिभाव।

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्द्धवार्षिक पत्रिका "नवकिरण" प्राप्ति हुई, सर्वप्रथम धन्यवाद। पत्रिका का यह अर्द्धवार्षिक अंक रचनाओं की विविधता से पूर्ण है। इस अंक में सम्मिलित रचनाएं बहुअक्षरणीय हैं जिनमें भाव और शिल्प का सुंदर संयोजन है। साहित्यिक विधाओं की बहुव्यक्ति को जिस संपादकीय कौशल से प्रस्तुत किया गया है वो अत्यंत प्रशंसनीय है। इस अंक की प्रमुख रचनाओं में 'अब गाये कोलेरा' (वाग्/विशेष रूप से उत्तरेखनीय है जिसमें रचना के माध्यम से सामाजिक सन्देशों और विपुलता की पड़ताल की गई है। रचना 'जुनिपर' की सर्वांगीण समीक्षा है जिसमें मानव रूप को महत्व देकर उसके सम्बन्ध में सर्वोपरि बताया गया है। अन्य उत्तरेखनीय रचनाओं में 'गजले', 'मोबाइल युग', 'छातीज', 'नैतिक मूल्यों का पतन' शामिल हैं। इसके अलावा 'अर्द्धवार्षिक' आलेख के माध्यम से कुल ऐसी सातक बीसवीं के बारे में बहुत ही रोचकपूर्ण शैली में जानकारी का प्रकाश की गई है।

राजभाषा हिंदी के प्रसार में पत्रिका "नवकिरण" निरन्तर अपनी भूमिका को सशक्त करती जा रही है। इसका भविष्य और उज्ज्वल हो यही कामना है।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा (पत्रिका हिंदी)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
UTTARAKHAND



पत्रांक: हिन्दी/आमजन्य-वित्तिय/25/(2018-2019)मई
दिनांक: 10.08.2020

शेरा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार), हरिद्वार,
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सैक्टर 33-बी, पंजीमड-160020
टेलीफोन नं. - 2610957, 2613211, 2615382
फैक्स नं. - 0172 2603824

विषय: हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 38वें अंक की पाहली के संबंध में।

महोदय,
अपकी मूलपत्रिका नवकिरण का 38वां अंक संसार प्राप्त हुआ। पत्रिका पंक्ति करने हेतु धन्यवाद। उक्त पत्रिका का मुझ पृष्ठ व साज - सज्ज अतीव आकर्षक है। यह क्षेत्र विशेषताओं को अभिव्यक्त करने वाला है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व कविताएं जनसंपर्क एवं महत्वपूर्ण व संश्लेषणीय हैं। पत्रिका के संकलन हेतु बड़ाई स्वीकार करें और आशा करते हैं कि यह पत्रिका राजस्थान हिन्दी के प्रचार - प्रसार व हिन्दी को बढ़ावा देने में अपना योगदान अवश्य ही प्रदान करेगी तथा अन्य कार्यकर्ताओं को हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन के लिए प्रेरित करेगी। अतिथि में, पत्रिका के रंगीन पृष्ठों एवं चित्रों के साथ और भी निखर कर आने की संभावनाएं व्यक्त हैं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिन्दी



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम उपाय, इलाहाबाद
Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement)-I, U.P., Allahabad

प.सं. हि.अ.पत्रिका/26194
दिनांक: 18.08.2020

शेरा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी हिन्दी का
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदार), हरिद्वार,
लेखा भवन, प्लॉट नं. 4 व 5, सैक्टर 33-बी,
पंजीमड- 160020

विषय:- हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 38वें अंक की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "नवकिरण" के 38वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के आकर पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं अन्य विभिन्न कार्यक्षेत्रीय गतिविधियाँ से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। श्री कुमार रामें 'अनिल' की कहानी 'चूकचूत', श्री रवीन्द्र सिंह की कविता 'फिर यहाँ लकड़ी है', श्री सुभाष आनंद की कहानी 'जंगी सिपाही', श्री आशीष कुमार की कहानी 'जुगियर तथा श्री विनय कुमार नर्ग की कविता 'जल है तो काँच है' आदि काही रोचक एवं आनंददायक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु हार्दिक बधाइयाँ। कार्यालय परिवार पत्रिका की अभिरत प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी हिन्दी

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है। कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी, बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को, हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

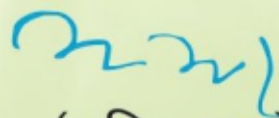
संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूँ कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूँ, - अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020


(अमित शाह)

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2020-21 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन /की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%



11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।



राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका



डॉ. सुमीत जैरथ

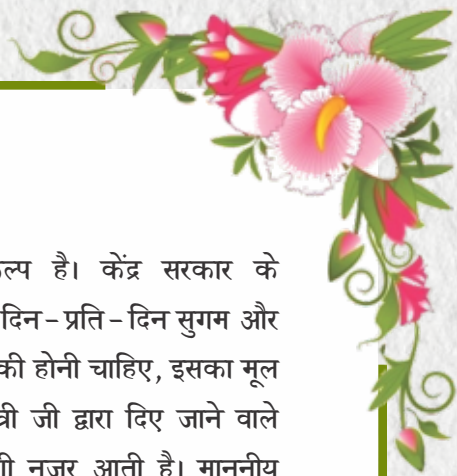
राजभाषा अर्थात् राज-काज की भाषा, अर्थात् सरकार द्वारा आम-जन के लिए किए जाने वाले कार्यों की भाषा। राजभाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए। तब से लेकर आज तक देश भर में स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों एवं विभागों आदि में सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन तथा सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में राजभाषा विभाग की अहम भूमिका रही है। राजभाषा विभाग अपने क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से सभी स्तरों पर राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है।

हम सभी जानते हैं कि जब हमारे संविधान निर्माता संविधान को अंतिम स्वरूप दे रहे थे, इसका आकार बना रहे थे, उस वक्त कई सारी ऐसी चीजें थी जिसमें मत-मतांतर थे। देश की राजभाषा क्या हो?, इसके विषय में इतिहास गवाह है कि तीन दिन तक इस संदर्भ में बहस चलती रही और देश के कोने-कोने का प्रतिनिधित्व करने वाली संविधान सभा में जब संविधान निर्माताओं ने समग्र स्थिति का आकलन किया, दूरदर्शिता के साथ अवलोकन, चिंतन कर एक निर्णय पर पहुंचे तो पूरी संविधान सभा ने सर्वानुमत से 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी।

अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

महान लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी की पक्तियां 'आप जिस प्रकार बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।' को ध्यान में रखते हुए राजभाषा - हिंदी को और



सरल, सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए राजभाषा विभाग दृढ़ संकल्प है। केंद्र सरकार के कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा हिंदी में काम करने को दिन-प्रति-दिन सुगम और सुबोध बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए प्रभावी रणनीति किस प्रकार की होनी चाहिए, इसका मूल सूत्र क्या होना चाहिए?, इस पर विचार करने के दौरान मुझे माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए जाने वाले 'स्मृति-विज्ञान' (Mnemonics) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी नजर आती है। माननीय प्रधानमंत्री जी से प्रेरणा लेते हुए राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के लिए विभाग की रणनीति में 10 'प्र' के फ्रेमवर्क और रूपरेखा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है, जो निम्न प्रकार से है।

प्रेरणा (Inspiration and Motivation)

प्रेरणा (Inspiration) का सीधा तात्पर्य पेट की अग्नि (Fire in the belly) को प्रज्वलित करने जैसा होता है। हम सभी यह जानते हैं कि प्रेरणा में बड़ी शक्ति होती है और यह प्रेरणा सबसे पहले किसी भी चुनौती को खुद पर लागू कर दी जा सकती है। प्रेरणा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है लेकिन यदि संस्थान का शीर्ष अधिकारी किसी कार्य को करता है तो निश्चित रूप से अधीनस्थ अधिकारी कर्मचारी उससे प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

प्रोत्साहन (Encouragement)

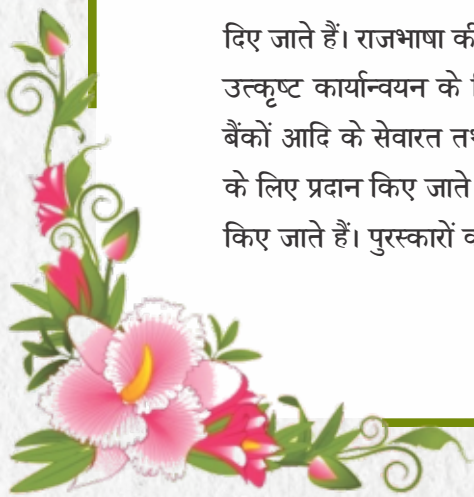
मानव स्वभाव की यह विशेषता है कि उसे समय-समय पर प्रोत्साहन की आवश्यकता पड़ती है। राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में यह प्रोत्साहन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अधीनस्थ अधिकारियों/कर्मचारियों को समय-समय पर प्रोत्साहित करते रहने से उनका मनोबल ऊंचा होता है और उनके काम करने की शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

प्रेम (Love and Affection)

वैसे तो प्रेम जीवन का मूल आधार है किंतु कार्य क्षेत्र में अपने शीर्ष अधिकारियों द्वारा प्रेम प्राप्त करना कार्य क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार करता है। राजभाषा नीति सदा से ही प्रेम की रही है यही कारण है कि आज पूरा विश्व हिंदी के प्रति प्रेम की भावना रखते हुए आगे बढ़ रहा है।

प्राइज अर्थात् पुरस्कार (Rewards)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रत्येक वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार दिए जाते हैं। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/बैंकों उपक्रमों आदि को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए दिए जाते हैं और राजभाषा गौरव पुरस्कार विभिन्न मंत्रालयों/विभागों/उपक्रमों बैंकों आदि के सेवारत तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा हिंदी में लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार 14 सितंबर, हिंदी दिवस के दिन माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कारों का महत्व इस बात से समझा जा सकता है कि देश के कोने-कोने से इन पुरस्कारों के





लिए प्रविष्टि आती है। जब मैंने राजभाषा विभाग का कार्यभार संभाला उस समय स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' के अंदर डेटाबेस को मजबूत करने के लिए सचिव (रा.भा.) की ओर से प्रशस्ति पत्र देने का निर्णय किया। इस कदम का यह परिणाम हुआ कि लगभग डेढ़ महीने के अंदर ही कंठस्थ का डाटा 3 गुना से ज्यादा बढ़ गया। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि प्राइज यानि पुरस्कार का महती योगदान होता है।

प्रशिक्षण (Training)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के माध्यम से प्रशिक्षण का कार्य करता है। पूरे वर्ष अलग-अलग आयोजनों में सैकड़ों की संख्या में प्रशिक्षणार्थी इन संस्थानों के माध्यम से प्रशिक्षण पाते हैं। कहते हैं – आवश्यकता, आविष्कार और नवीकरण की जननी है। कोरोना महामारी ने हम सभी के सामने अप्रत्याशित संकट और चुनौती खड़ी कर दी। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर हम सभी को इस महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। इससे प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने आपदा को अवसर में परिवर्तित कर दिया। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए – ई-प्रशिक्षण और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स के माध्यम से हमारे दो प्रशिक्षण संस्थान – केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ने पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत – स्थानीय के लिए मुखर हों (Be Local for Vocal) अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम को NIC & Video Desk Top पर माइग्रेट किया जा रहा है।

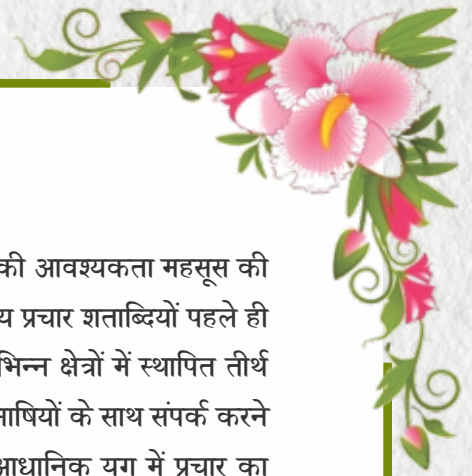
प्रयोग (Usage)

‘यदि आप प्रयोग नहीं करते हैं तो आप उसे भूल जाते हैं (If you do not use it, you lose it) हम जानते हैं कि यदि किसी भाषा का प्रयोग कम किया जाए या न के बराबर किया जाए तो वह धीरे-धीरे मन मस्तिष्क के पटल से लुप्त होने लगती है इसलिए यह आवश्यक होता है की भाषा के शब्दों का व्यापक प्रयोग समय समय पर करते रहना चाहिए। हिंदी का प्रयोग अपने अधिक से अधिक काम में मूल रूप से करें ताकि अनुवाद की बैसाखी से बचा जा सके और हिंदी के शब्द भी प्रचलन में रहें।

प्रचार (Advocacy)

संविधान ने हमें राजभाषा के प्रचार का एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा है जिसके अंतर्गत हमें हिंदी में कार्य करके उसका अधिक से अधिक प्रचार सुनिश्चित करना है। वर्तमान में राजभाषा हिंदी के प्रचार में हमारे शीर्ष नेतृत्व – माननीय प्रधानमंत्री जी तथा माननीय गृह मंत्री जी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। देश-विदेश के मंचों पर हिंदी के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा है। हम जानते हैं कि





स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस की गई। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का पक्ष इसलिए प्रबल था क्योंकि इसका अंतरप्रांतीय प्रचार शताब्दियों पहले ही हो गया था। उसके इस प्रचार में किसी राजनीतिक आंदोलन से ज्यादा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित तीर्थ स्थानों में पहुंचने वाले श्रद्धालुओं का योगदान था। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के साथ संपर्क करने का एक प्रमुख माध्यम भाषा हिंदी थी जिससे स्वतः ही हिंदी का प्रचार होता था। आधुनिक युग में प्रचार का तरीका भी बदला है। तकनीक के इस युग में संचार माध्यमों को बड़ा योगदान है इसलिए राजभाषा हिंदी के प्रचार में भी इन माध्यमों का अधिकतम उपयोग समय की मांग है।

प्रसार (Transmission)

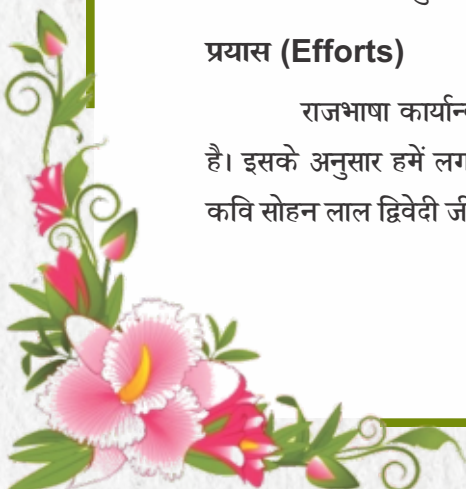
राजभाषा हिंदी के काम का प्रसार करना सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि की प्राथमिक जिम्मेदारी में है और यह संस्था प्रमुख का दायित्व है कि वह संविधान के द्वारा दिए गए दायित्वों जिसमें कि प्रचार-प्रसार भी शामिल है, का अधिक से अधिक निर्वहन करे। राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है, इसलिए राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न केंद्रीय संस्थानों द्वारा प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार दिया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी गृह-पत्रिकाओं का प्रसार होगा और हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो सकेंगे। राजभाषा हिंदी के प्रसार में दूरदर्शन, आकाशवाणी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके साथ-साथ बालीवुड ने हिंदी के प्रसार में अद्वितीय योगदान दिया है।

प्रबंधन (Administration and Management)

यह सर्वविदित है कि किसी भी संस्थान को उसका कुशल प्रबंधन नई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है इसे ध्यान में रखते हुए संस्था प्रमुखों को राजभाषा के क्रियान्वयन संबंधी प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई है। राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएँ, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएँ और उपाय करें।

प्रयास (Efforts)

राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में यह अंतिम 'प्र' सबसे महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार हमें लगातार यह प्रयास करते रहना है कि राजभाषा हिंदी का संवर्धन कैसे किया जाए। यहाँ कवि सोहन लाल द्विवेदी जी की पंक्तियाँ एकदम सटीक बैठती हैं कि





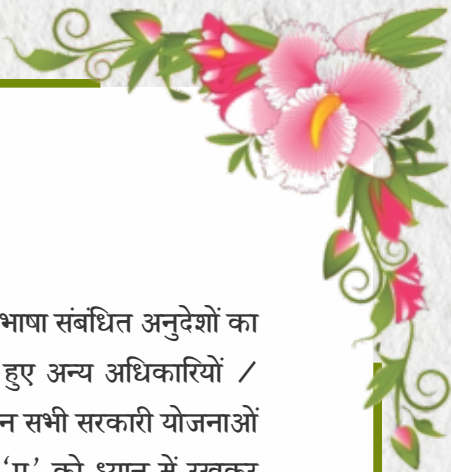
लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अस्वरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती





संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता और पूरी निष्ठा के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों / कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इन दस 'प्र' को ध्यान में रखकर राजभाषा हिंदी का प्रभावी कार्यान्वयन करने की दिशा में सफलता प्राप्त होगी और हम सब मिलकर माननीय प्रधानमंत्री जी के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के सपने को साकार करने में सफल होंगे।

सचिव
राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार

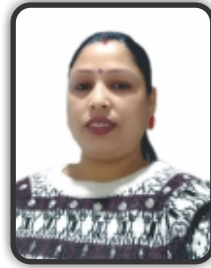


सूचना

नवकिरण का आगामी अंक शीघ्र प्रकाशित किया जाना है। रचनाकार अपनी रचनाएं जैसे लेख, संस्मरण, विभागीय लेख, कहानी, कविता, गीत गज़ल इत्यादि हिन्दी कक्ष को भिजवा दें। रचनाएं पृष्ठ के एक तरफ टाईप की हुई अथवा हस्तलिखित मौलिकता प्रमाण - पत्र सहित भेजें। डिजिटल रचनाओं का स्वागत किया जायेगा।



कार्यालय में प्रयोग होने वाले कुछ महत्वपूर्ण राजभाषा अधिनियम/नियम



पूजा सिंह मंडल

1. हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही देना अनिवार्य है –

राजभाषा अधिनियम 1976 के नियम 5 में यह प्रावधान किया गया है कि हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर सभी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों द्वारा हिन्दी में ही दिए जाएंगे।

2. 14 प्रकार के दस्तावेज द्विभाषी रूप में जारी करना –

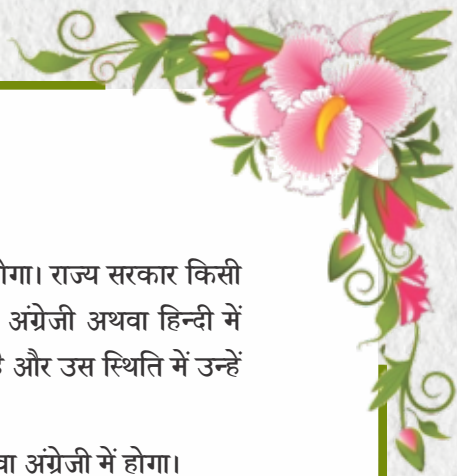
राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 की उपधारा (3) अथवा धारा 3(3) में यह प्रावधान किया गया है कि सभी केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में 14 प्रकार के दस्तावेज नामतः सामान्य आदेश, संकल्प, नियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट, प्रेस विज्ञप्तियाँ, सरकारी कागज पत्र, संविदाएँ, करार, अनुज्ञप्तियाँ, अनुज्ञा पत्र, टेंडर नोटिस, टेंडर फार्म, संसद के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी किए जाएँगे। साथ ही, ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व है कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसे सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप ही में तैयार किए जाते हैं और जारी किए जाते हैं।

3. केन्द्र सरकार के कार्यालयों के बीच पत्राचार –

- (क) मंत्रालयों/विभागों के बीच पत्राचार हिन्दी अथवा अंग्रेजी में होगा।
- (ख) 'क' क्षेत्र में स्थित मंत्रालयों/कार्यालयों, विभागों और उनके संबंध) तथा अधीनस्थ कार्यालयों के बीच केन्द्र सरकार द्वारा यथानिर्धारित अनुपात में हिन्दी में पत्राचार होगा। इसके साथ ही हिन्दी पत्राचार का प्रतिशत राजभाषा विभाग द्वारा जारी लक्ष्यों के अनुरूप होगा।
- (ग) 'क' क्षेत्र के कार्यालयों के बीच पत्राचार केवल हिन्दी में होगा।
- (घ) अंतरक्षेत्रीय कार्यालयों के बीच पत्राचार हिन्दी अथवा अंग्रेजी में होगा।
- (ङ) 'ख' अथवा 'ग' क्षेत्र में कार्यालयों के बीच पत्राचार हिन्दी अथवा अंग्रेजी में हो सकता है।

4. केन्द्र सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों तथा राज्यों आदि के साथ पत्राचार की व्यवस्था –

- (क) 'क' क्षेत्र के किसी राज्य या किसी व्यक्ति के साथ पत्राचार हिन्दी में होगा और यदि किसी मामले में अंग्रेजी भाषा में भेजा जाता है तो उसके साथ उसका हिन्दी अनुवाद भी भेजना होगा। 'क' क्षेत्र में स्थित राज्य सरकारों एवं जनता के साथ सामान्य स्थिति में पत्राचार केवल हिन्दी भाषा में होगा।
- (ख) 'ख' क्षेत्र की राज्य सरकारों के साथ पत्राचार हिन्दी और अंग्रेजी में होगा और यदि पत्र अंग्रेजी



भाषा में जारी किया जाएगा तो हिन्दी अनुवाद साथ में भेजना होगा। राज्य सरकार किसी अवधि विशेष के लिए किसी वर्ग या श्रेणी विशेष का पत्राचार अंग्रेजी अथवा हिन्दी में तथा अन्य भाषा में अनुवाद सहित भेजने के लिए कह सकती है और उस स्थिति में उन्हें अनुवाद भेजा जाना चाहिए।

‘ख’ क्षेत्र के राज्य में किसी व्यक्ति के साथ पत्राचार हिन्दी अथवा अंग्रेजी में होगा।

(ग) ‘ग’ क्षेत्र की राज्य सरकारों अथवा वहाँ की जनता के साथ पत्राचार केवल अंग्रेजी में होगा।

(घ) ‘ग’ क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालय ‘क’ अथवा ‘ख’ क्षेत्र के किसी राज्य अथवा संघ शासित प्रदेश को अपने पत्र हिन्दी या अंग्रेजी में भेज सकता है।

5. आवेदन, अभ्यावेदन आदि –

(क) कोई भी कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी या अंग्रेजी में कर सकता है।

(ख) जब कोई आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिन्दी में किया गया हो या उस पर हिन्दी में हस्ताक्षर किए गए हों, तब उसका उत्तर हिन्दी में ही दिया जाएगा।

(ग) यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (अनुशासनिक कार्यवाहियां समेत) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथास्थिति, हिन्दी या अंग्रेजी में होनी चाहिए तो वह उसे उसी भाषा में दी जाएगी।

6. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में टिप्पणों का लिखा जाना –

(क) कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत्त हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है और उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

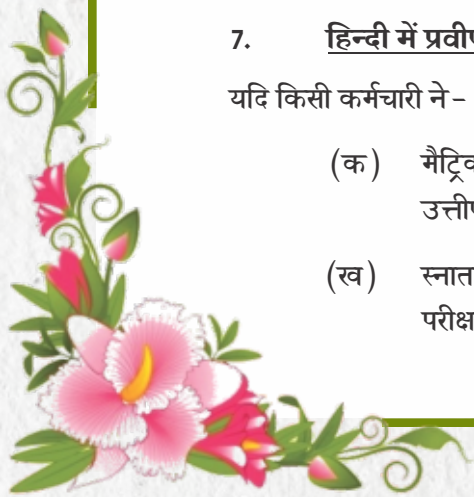
(ख) केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है, अन्यथा नहीं।

7. हिन्दी में प्रवीणता –

यदि किसी कर्मचारी ने –

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है; या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या



(ग) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है: -

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

8. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान -

यदि किसी कर्मचारी ने -

- (क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या
- (ख) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
- (ग) केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
- (घ) यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

9. मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि -

- (क) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।
- (ख) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्रारूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।
- (ग) केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदे हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी।

यह लेख कार्यालय में सभी को राजभाषा नियमों से अवगत कराने हेतु तथा राजभाषा हिन्दी में कामकाज को बढ़ावा देने के लिए लिखा गया है। यह लेख कार्यशाला संदर्शिका एवं राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर उपलब्ध राजभाषा नियमों का मिलाजुला संकलन है।

राजभाषा हिन्दी का उद्देश्य



संजीव कुमार

एक लोकतांत्रिक देश में जनमानस का कल्याण ही सर्वोपरि होता है। लोगों द्वारा चुनी गई सरकार लोगों के हितों को ध्यान में रखकर ही सभी नीतियां बनाती है, इन नीतियों को जनमानस तक पहुंचाने के लिए सरकारी प्रशासनिक प्रणाली का सहारा लेती है। किसी भी देश की राजभाषा इस प्रणाली में अहम योगदान निभाती है। सरकार की नीतियों, जनकल्याण की योजनाओं व निर्देशों को लोगों तक पहुंचाने के लिए भाषा महत्वपूर्ण होती है, यदि कोई भाषा लोगों के बीच अस्पष्टता व भ्रम पैदा करती है, तो उसका मुख्य उद्देश्य खत्म हो जाता है। भाषा वही उपयोगी और सार्थक सिद्ध होती है, जो लोगों में स्पष्टता पैदा करे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे देश की प्रशासनिक प्रणाली लंबे समय से अंग्रेजों के अधीन होने के कारण इस पर अंग्रेजी भाषा का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। इसके परिणामस्वरूप आज भी सरकारी काम-काज में अंग्रेजी का काफी वर्चस्व देखा जा सकता है। उस समय जब हमारे जन प्रतिनिधियों ने हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया था, तो उन्होंने काफी विचार-विमर्श करने के पश्चात् ही हिन्दी को संवैधानिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया था, क्योंकि हिन्दी ही देश के बहुत बड़े भू-भाग पर बोली व समझी जाती है। भारत एक बहुभाषी और विभिन्न संस्कृतियों वाला विशाल देश है, इन विभिन्नताओं को हिन्दी ने ही सूत्र में पिरोकर रखा है। वर्तमान में अगर हम आकलन करें तो अंग्रेजी भाषा अभी भी बहुत कम प्रतिशत लोगों के द्वारा ही स्पष्ट रूप से समझी जाती है। भाषा का उद्गम जिस स्थान पर होता है उसमें उस स्थान के संस्कार, संस्कृति, व्यवहार व भावनाओं का विलय हो जाता है। हिन्दी ही इन जनभावनाओं को समझाने वाली भाषा है। लोगों की कठिनाइयों व समस्याओं के निराकरण के लिए सबसे पहले लोगों के दिलों से जुड़ना पड़ता है, इसके लिए भाषा का महत्व बहुत बढ़ जाता है। यदि भाषा अपनेपन का अहसास दिलाती है, तो समस्याओं व कठिनाइयों का समूल नाश किया जा सकता है। हिन्दी ही वह भाषा है जो इसके लिए बहुत बड़ा किरदार निभा रही है।

प्रत्येक व्यक्ति जो देश की प्रशासनिक प्रणाली से जुड़ा है, उनका यह नैतिक कर्तव्य है कि वे अपने काम-काज में ज्यादा से ज्यादा राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करें, ताकि कोई भी बात जनमानस तक आसानी से पहुंच सके और उनके जीवन में परिवर्तन आ सके।

‘ किसी देश को एकता के सूत्र में बांधने का सबसे स्थाई सुदृढ़ साधन उसकी भाषा है। ’

तनाव



अशोक कुमार

आमतौर पर देखा गया है कि मनुष्य मानसिक और शारीरिक तनाव महसूस कभी कभी करता है क्योंकि वह अपनी जिन्दगी में जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए काफी काम काज करता है। यहां तक देखा गया है कि यदि मनुष्य शारीरिक कार्य करता है तो वह शारीरिक तौर पर थकान महसूस करता है। इस शारीरिक थकान को दूर करने के लिए मनुष्य पूर्ण आराम करके ठीक कर सकता है और फिर पूरी ऊर्जा के साथ काम करने को तैयार रहता है।

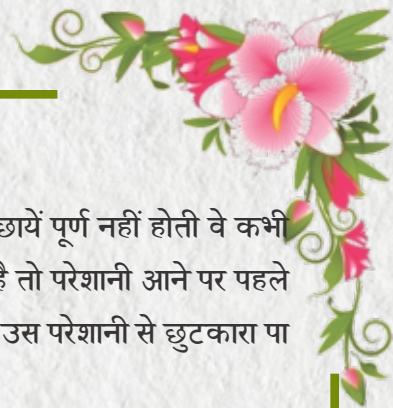
परन्तु मानसिक तनाव मनुष्य के जीवन में कई कारणों से होता है। जीवन को चलाने के लिए कई चीजों की जरूरत होती है। जिन चीजों की जीवन में कमी रहती है। वही मनुष्य के लिए परेशानी का कारण बन जाता है और उससे ही मानसिक तनाव बढ़ता है। यह सच है कि सभी साधन जीवन में नहीं मिल पाते अक्सर किसी न किसी चीज की जिन्दगी में कमी बनी रहती है। जैसे जीवन में धन की कमी है, तो जरूरत पर इसकी परेशानी होगी। अच्छी सेहत न होना इत्यादि ये सभी मनुष्य की परेशानी का कारण बनते हैं।

इस मानसिक तनाव को दूर करने के लिए मनुष्य कई तरह के तरीके प्रयोग में लाता है। जैसे म्यूजिक (गाने) सुनना या किसी और प्रोग्राम को देखना, नौंद ले लेना, लम्बी सैर करना, अपने मन की बात किसी अपने साथी से करने पर, परेशानी में किसी से सुझाव लेने पर।

कुछ लोग अपना मानसिक तनाव को दूर करने के लिए नशे का प्रयोग करते हैं। नशे के प्रभाव के अन्दर जब तक है तब मनुष्य परेशानी से राहत पाता है परन्तु जब होश आता है या नशे का प्रभाव खत्म हो जाता है तो वही परेशानी फिर सताने लगती है।

मेरे विचार से जब मनुष्य मानसिक तनाव महसूस करे तो सबसे पहले उसके कारण पर विचार करना चाहिए। जैसे धन सम्बन्धी परेशानी है तो धन जुटाने का प्रयास करना चाहिए यदि सेहत को लेकर परेशानी है तो अच्छी सेहत रखने के कारणों पर विचार करना चाहिए और अच्छी सेहत को प्राप्त करना चाहिए। जिन्दगी में जो कुछ मनुष्य के कंट्रोल में है उसे सुचारू रूप से करने पर जीवन ठीक ढंग से कट /चल सकता है और कुछ चीजें मनुष्य के कंट्रोल में नहीं हैं जिसे यथा सम्भव हो ठीक करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि फिर भी परेशानी दूर नहीं होती तो उसको लेकर परेशान नहीं होना चाहिए बल्कि संतुष्टि की राह पर चलना सीखना चाहिए।

मनुष्य में संतुष्टि से रहने का सबसे बड़ा गुण है। यदि मनुष्य इस नियम पर जीवन में चलता है तो वह



हमेशा खुश रहता है क्योंकि उस आदमी की इच्छायें भी सीमित रहती है और यदि कुछ इच्छायें पूर्ण नहीं होती वे कभी परेशान नहीं होते क्योंकि वे जीवन में संतुष्टि के नियम पर चल रहे हैं। जब मनुष्य संतुष्ट है तो परेशानी आने पर पहले उसके कारण को ढूँढ़ता है तो फिर यह स्वभाव से उसको दूर करने का तरीका ढूँढ़ता है और उस परेशानी से छुटकारा पा जाता है।

दूसरी ओर यदि कोई मनुष्य अपनी परेशानी को दूर करने के लिए किसी नशे इत्यादि का प्रयोग करता है तो वह अपनी सेहत और पैसा बर्बाद कर ही रहा है साथ में वह अपने परिवार की परेशानियों को बढ़ाएगा। नशा मनुष्य की सेहत को खराब करता है और बीमारियों का कारण बनता है। जीवन में सीमित आशाएं तथा संतुष्टि का नियम काफी फलदायक रहता है क्योंकि इससे मनुष्य की परेशानियां मानसिक तौर पर परेशान नहीं करती।



जीने का गुर



नीतू सिंह

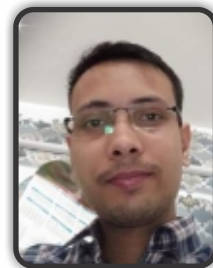


ऐ ज़िंदगी तुझे कैसे जिया जाए
गुर कुछ हमें भी सिखा
कैसे ज़ख्मों को भरा जाए
हर मोड़ रंजिशों से भरा
कदमों को बढ़ाना आसान नहीं
कोई रास्ता बता ऐसा
सरलता से चला जाए
रिश्तों के हैं बंधन
कभी दुश्मनी के हैं रिश्ते
हाथ थाम के बता
कैसे आगे बढ़ा जाए
कभी आसूँ कभी खुशियां

खामोशियां – सरगोशियां
हिम्मत दे हमें भी
कि फलक को छुआ जाए
भरना चाहती हूँ उड़ान
नई पहचान के साथ
परो में दे इतनी ताकत
खुशी से उड़ा जाए
घबराती हूँ अक्सर ऊँचे पहाड़ों से
आएंगी रास्तों में ढलाने भी
दे नई ताकत नई हिम्मत
आगे, बस आगे ही बढ़ा जाए।



हिन्दी की ओर



अंकित कुमार ठाकुर

किसी भी भाषा के बारे में बात होती है तो, मुझे वो कहानी याद आती है जो हमने कक्षा बारहवीं की अंग्रेजी की किताब 'फ्लेमिंगो' में पढ़ी थी। विडंबना यह भी थी कि अंग्रेजी की उस किताब के पहले ही पाठ का नाम था 'द लास्ट लेसन' यानी की 'आखिरी पाठ'।

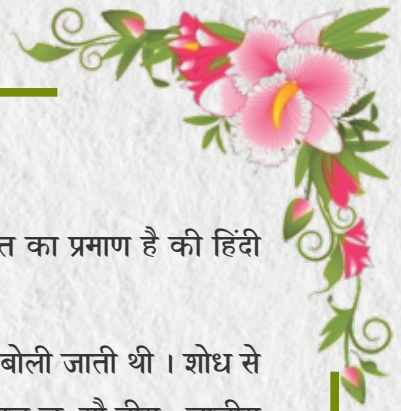
कहानी उस दौर में स्थापित की गयी थी जब बिस्मार्क शासित प्रुशिया ने "फ्रांस की सेनाओं को हराकर फ्रांस पर कब्जा कर लिया था। ऐसे में ही एक दिन नन्हा सा 'फ्रान्ज़' जो फ्रेंच भाषा का बहुत अधिक ज्ञान नहीं रखता था, उसके कक्षा में देरी से पहुँचने पर उसके शिक्षक 'एम् हेमल' ने ना उसे डाँटा, ना उसे कोई सजा दी।

उन्होंने केवल अपना दुःख व्यक्त किया और दुःख व्यक्त करते हुए ही वे जाने कैसी गूढ़ बातें कहते गए, सभ्यताओं के बारे में, संस्कृति के बारे में, जिसने हर पढ़ने वाले को उनकी एक-एक कही हुई बात को बार-बार सोचने के लिए मजबूर किया। हेमल के दुःखी होने के पीछे की वजह यह भी थी की नए नियमों के मुताबिक फ्रेंच भाषा को विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम से हटाया जा रहा था और जर्मन भाषा का पाठन अनिवार्य किया जा रहा था।

एम् हेमल ने उस आखिरी पाठ में इस बात पर जोर दिया की भाषा किसी भी सभ्यता की पहचान होती है, और उन्होंने दुःख व्यक्त किया, समय रहते हुए अपनी भाषा की कीमत ना पहचान पाने का। उन्हें दुःख था की आने वाली पीढ़ी केवल भाषा ही नहीं, भाषा के साथ-साथ अपनी सभ्यता को भी भूल जाने वाली थी। खैर, हम सबको ही मालूम है कि फ्रेंच भाषा ने ये त्रासदी झेली और उसके बावजूद भी लुप्त नहीं हुई बल्कि विश्व पटल पर एक अमिट पहचान भी बनाये हुए है।

अंग्रेजी की उस किताब में यह पाठ पढ़कर स्वतः ही हिंदी भाषा की याद आ जाती है और ऐसा होना स्वाभाविक है। हमने हिंदी को पराया नहीं किया है। आज भी भारत में हिंदी-भाषी बहुतायत हैं। और तो और हमने हिंदी को बचने के लिए साल का एक दिन हिंदी के नाम भी कर दिया है। जगह-जगह कार्यक्रम होते हैं, हिंदी के नाम पर। हिंदी भाषा के लेखक, पत्रकार आदि भी पिछले कुछ वर्षों से सोशल नेटवर्क पर छाए रहे हैं।

ये सब प्रयास सराहनीय हैं और ऐसे प्रयास होते रहने चाहिए लेकिन गौर करने पर ये सभी प्रयास सतही मालूम होते हैं। हिंदी भाषा का क्षरण केवल यहीं तक सीमित नहीं है की हिंदी भाषा को अपने ही समाज के द्वारा



दोयम दर्जे की भाषा माना जाने लगा है परन्तु नई पीढ़ी की घटती हुई रूचि भी इस बात का प्रमाण है की हिंदी भाषा को बचाने की आवश्यकता है ।

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में दुनिया में सात हजार के करीब स्थानीय भाषाएँ बोली जाती थी । शोध से पता चलता है कि इक्कीसवीं सदी के पचासवें वर्ष तक पहुँचते-पहुँचते ही इनमें से केवल छः सौ तीस-चालीस के करीब भाषाओं का अस्तित्व बचेगा । इन सात हजार भाषाओं में से कुछ भाषाओं का इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या दस हजार से भी कम है ।

ऐसे में, ये सोचना की हिंदी भाषा तो फिर भी बेहतर हाल में है, लाजिमी होगा । पर, अगर आप भाषाओं के बारे में जानने वाले हैं, तो आप जानते होंगे कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, हिंदी के कई रूप हैं जो अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचलित हैं । हिंदी भाषा की सबसे खुबसूरत बात यह है कि भाषा हर क्षेत्र की विविधता को अपने में समाहित कर लेती है । इसमें अंग्रेजी और उर्दू के शब्द तो हैं ही पर साथ-साथ हिंदी भाषा का खुद का रूप भी बोलने वाले के हिसाब से बदलता रहता है । राजस्थानी, हरियाणवी, बिहारी, अवधी बोली हो या खड़ी बोली या दक्खिनी हिंदी, हिंदी का हर स्वरूप अद्भुत सुन्दरता समेटे हुए है ।

ऐसे में एक सवाल स्वतः ही प्रस्फुटित होती है की जब हम हिंदी को बचाने की बात करते हैं तो किस हिंदी को बचाने की बात करते हैं? हम आमतौर पर बोली जाने वाली हिंदी को बचा भी ले जाएँ तो भी हिंदी के स्थानीय स्वरूप को बचाने की आवश्यकता महसूस होती है । क्योंकि हिंदी का हर स्वरूप किसी न किसी क्षेत्रीय सभ्यता की विरासत की मास्टर चाभी है । ऐसे में, समझ आता है की हिंदी को केवल बोलकर प्रयोग में लाना ही काफी नहीं होगा । हिंदी को केवल बोले नहीं, हिंदी को पढ़ें भी और ज्यादा से ज्यादा लिखें भी । और सबसे अहम् बात, कोशिश करें की आप सही हिंदी लिखें, सही हिंदी पढ़ें ।

अक्सर ऐसा देखा जाता है की जब इन्सान आकर्षणों की खोजबीन से थक जाता है तो वो अपने अन्दर तलाशता है यथार्थता को । ये इंसानी फितरत ही है कि जब वो टहलते-टहलते थक जाता है तो घर की ओर लौटना चाहता है । आने वाले निकट भविष्य में ऐसे भी दिन आयेगे जब आप और हम अपने हिंदी की ओर यानि अपने घर की ओर, अपनी अतुलनीय सभ्यता और संस्कृति की ओर लौटना चाहेंगे क्योंकि हिंदी भाषा खुद में ही भारतीय सभ्यता के रहस्य को समेटे हुए है । इन्सान कितना भी आगे क्यों ना बढ़ जाये, पर उसे हमेशा अपनी जड़, अपनी पुरानी सभ्यता की ओर लौटना ही होता है वैसे ही जैसे घर वापस जाना होता है ।

हिंदी भाषा हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता की कुंजी है । जब तक हमारे पास हमारी भाषा है तब तक हम कितने भी दूर क्यों न चले जाएँ टहलते-टहलते, भटकते-भटकते, हमारे पास एक आश्वासन तो है, कि हम जब चाहें तब अपने घर की ओर, अपने सभ्यता की ओर वापिस लौट सकते हैं । पर, शर्त यह है कि हमें ये चाभी संभाल कर रखनी होगी ताकि जब हम लौटें, जब भी हम लौटें तब हमारे पास लौटने का कोई जगह तो हो, कोई संभाव्य साधन तो हो ।

जीवन की साँझ



तजिन्द्र सचदेवा

“डिंग..डांग..डिंग..डांग।” स्विच पर ऊंगली रखते ही बेल बज उठी, लेकिन प्रतीक्षा करने के उपरान्त भी, जब कोई हल-चल सुनाई नहीं दी तो, मैंने पुनः बेल का स्विच दबाया।

“डिंग..डांग..डिंग डांग।” बेल पुनः बज उठी। परन्तु किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं। फिर मैंने अपना पर्स खोल कर देखा, शायद उसी में चाबी हो जबकि मैं जानती थी कि चाबी पर्स में नहीं होगी, परन्तु व्यर्थ।

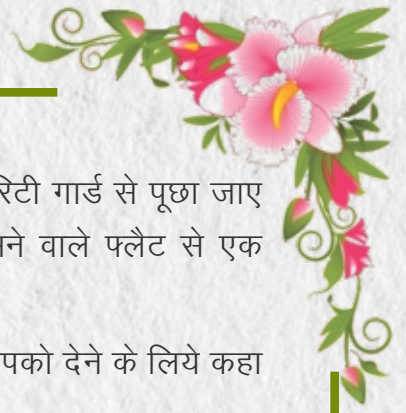
जब से ‘माँ’ गाँव से घर आई थी, मैं चाबी अपने साथ नहीं ले कर जाती थी, क्योंकि मुझे मालूम था कि ‘माँ’ शाम को घर पर ही मिलेगी और आठ-दस दिनों से ऐसा कभी हुआ भी नहीं था कि ‘माँ’ दरवाजे पर मेरी प्रतीक्षा नहीं कर रही हो। मैंने माँ से बोला भी था कि मैं कभी कभार लेट हो जाती हूँ, तुम मेरी प्रतीक्षा ना कर, चाय पी लिया करो, परन्तु माँ ने कहा –

‘सारा दिन तो अकेली बीत जावे है, शाम को भी तेरे साथ चाय का प्याला ना पीउं। ना छोरी जब तक तू घर ना आवेगी मैं चा तो ना पीउंगी।’ माँ चाहती थी कि सायं की चाय हम दोनों साथ-साथ पीयें और बातचीत करें। परन्तु आज आज क्या हो गया था माँ दरवाजा ही नहीं खोल रही थी।

मैंने आवाज लगाई – ‘माँ... माँ।’ कोई उत्तर न पाकर, मैं खिड़की की तरफ मुड़ी। खिड़की से अन्दर झांकने का प्रयास करने लगी। शायद कुछ दिखाई दे जाए, परन्तु मुझे ऐसा कुछ भी आभास नहीं हुआ कि माँ अन्दर है।

बेचैनी बढ़ती जा रही थी। कई बार माँ को आवाज दे चुकी थी। अनेक बार बेल बजा चुकी थी परन्तु सब व्यर्थ। नेगेटिव विचार मन में आने लगे थे – ‘कहीं माँ को किसी ने ... कुछ कर तो नहीं दिया। कोई आया हो और माँ ने बिना कुछ पूछे दरवाजा खोल दिया होगा और अन्दर आकर उसने माँ को’ लेकिन घर के अन्दर कोई आया हो ऐसा भी कुछ प्रतीत हो नहीं रहा था। माँ को समझाया भी था – ‘माँ किसी अजनबी के लिये दरवाजा मत खोलना। चाहे कोई भी हो। कुछ भी कहे। कुछ भी कहे’ माँ की वही आत्म विश्वास से भरपूर आवाज –

‘हाँ-हाँ सब समझती हूँ .. ये बाल यूँ ही धूप में सफेद ना किये मैंने।’ ‘मैं हंस दी थी। माँ भी



हंस पड़ी थी । परन्तु अब क्या करूँ मैं । मन में विचार आया — क्यों न सिक्योरिटी गार्ड से पूछा जाए शायद उसे कुछ मालूम हो । जैसे ही मैं सीढ़ियाँ उतरने के लिये मुड़ी, सामने वाले फ्लैट से एक नौजवान महिला ने मुझे रोका —

‘सुनिये, यह आपके घर की चाबी । शायद आपकी ‘मदर’ थी, उन्होंने आपको देने के लिये कहा था ।’

मैं हतप्रभ ‘माँ ने चाबी दी थी?.....’

‘माँ कहां हैं?’

‘मुझे नहीं मालूम,’

‘प्लीज, कीज ।’ मैं उसे देखती रही । अनमने ही मैंने चाबी उसके हाथ से ले ली थी ।

‘माँ ने बताया नहीं कहाँ जा रही हैं?’

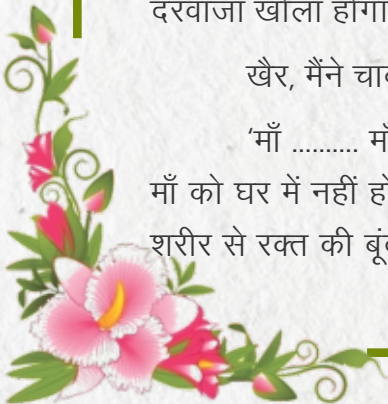
‘नहीं ।’

उस महिला ने अपने फ्लैट का दरवाजा खोलते हुए उत्तर दिया और अन्दर जाते ही दरवाजा बन्द कर लिया ।

मैं परेशान तो थी ही अब हैरान होने की बारी थी । मुम्बई जैसे महानगर में यही परेशानी है कि कोई किसी को नहीं पहचानता । मैंने भी इस महिला को पहले कभी नहीं देखा । यहां पड़ोसी-पड़ोसी को नहीं जानता और रिश्तेदार, जान-पहचान वालों से तो कभी मोबाईल पर ‘हैलो’ हो जाए तो ठीक वरना वह भी नहीं । मालूम नहीं सामने वाले फ्लैट में कितने किरायेदार आए और चले गए । यह भी होगी कोई नई किरायेदार । परन्तु इस समय मुझे इसकी सहायता की आवश्यकता महसूस हो रही थी । इस समय मुझे एहसास हो रहा था कि हमारे गांव का वातावरण कितना अच्छा था । इस परिस्थिति में दस लोग आ कर खड़े हो जाते और मिनटों में माँ का पता चल जाता कि माँ है कहां? और इस पड़ोसन ने जानने की कोशिश भी नहीं की कि मैं कितनी परेशान हूँ? एक बजुर्ग महिला घर से गायब है और मैं कार्यालय से अभी-अभी छुट्टी करके घर लौटी हूँ । मुझे कुछ पानी वगैरह ही पूछ लेती पर नहीं, उसे तो चाबी लौटानी थी, जो उसने लौटाई उसका कार्य सम्पन्न । उसे अब किसी से कोई मतलब नहीं था । मालूम नहीं माँ से चाबी कैसे ली होगी? माँ ने भी दस बार डोर बेल बजाई होगी तब कहीं जाकर इसने दरवाजा खोला होगा । चाबी लेने के लिए भी इसने दस बहाने बनाए होंगे ।

खैर, मैंने चाबी से लॉक खोला और अन्दर दाखिल हुई ।

‘माँ माँ’ बच्चों की तरह चिल्लाते हुए मैंने कुछ ही सेकेंड्स में सारे कमरे छान लिए परन्तु माँ को घर में नहीं होना था, सो कहीं दिखाई नहीं दी । अब तो मुझे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे मेरे शरीर से रक्त की बूंदें धार बन कर बह गई हो और मैं निढाल हो कर बैड पर गिर पड़ी । ध्यान तो माँ





की तरफ ही था ।

माँ को दस दिन पहले ही बहुत मनाने के उपरान्त हम लोग गाँव से अपने घर मुम्बई लेकर आए थे । दोनों बड़े भाईयों को माँ ने उनके यहां जाने के लिए मनाही कर दी थी । माँ किसी के साथ भी रहने के लिये तैयार नहीं थी । उसको अपना घर, अपना गाँव, गाँव के लोग ही अच्छे लगते थे । शहर की बेरुखी उन्हें पसन्द नहीं थी ।

जब मैंने कहा — ‘माँ वहां भी तो अपने लोग हैं, वहां हम सब भी हैं । दीपू भी है । तुम्हें बोर नहीं होने देगा ।

तब माँ ने कहा — ‘जाणु हूँ री — वो तेरा छोटा तो अपने मोबाईल और वो क्या कहे हैं मुआ... कमपुटर में घुसा रहेगा और तुम दोनों को अपने दफ्तर से फुर्सत न मिलने वाली बात किस से करूंगी दीवारों से के? बाकी गई थी मैं बड़े के यहां, देखा शहर के लोगों ने किसी को देखे ही न राम—राम बोलो तो ऐसे देखे हैं जैसे उनको गोली मार दी है । सुन ले छोरी मैं ना जाने वाली थारी मुम्बई ।’

माँ को दोनों भाइयों के यहाँ जाना बिल्कुल पसंद नहीं था । दोनों भाभियाँ भी उन्हें रखना तो चाहती, परन्तु माँ को शहर के कमरों में सारा दिन अन्दर घुस कर रहना कतई अच्छा नहीं लगता । उनको चाहिये बहुत सारे लोगों का घर में आना जाना । घर के समीप मंदिर । सुबह—शाम मंदिर में जाना । परन्तु मुम्बई जैसे शहर में यह सब कहाँ । और सबसे अधिक बुरा लगता है, अगर उन्हें कोई टोक दे । कोई उन्हें टोक दे यह तो उन्हें बिल्कुल गवारा नहीं, परन्तु मैं चाहती थी कि माँ हम में से किसी के पास रहे । इस बुढ़ापे में कहीं कुछ हो गया तो हम सभी भाई बहनों को लोग तो बुरा भला कहेंगे ही, मुझे भी अच्छा नहीं लगेगा । इसलिए मैं दिल से चाहती थी कि माँ मेरे साथ रहे ।

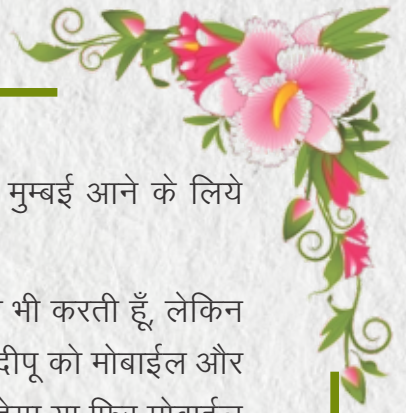
‘माँ, ऐसे क्यों बोले हो..... अगर पसन्द नहीं आया तो मत रहना वहाँ । कोई ज़ोर जबरदस्ती तो ना है ना..... देख लियो कुछ दिन रहके नहीं मन लगेगा तो छोड़ जावेगे आके ।’ मैंने माँ को मनाने का असफल प्रयास जारी रखा । जानती थी माँ को अपनी बात से सहमत कराना टेढ़ी खीर थी । ‘बच्चा बूढ़ा एक समान’ मुझे आज उस भले आदमी की कही यह बात ठीक प्रतीत हो रही थी । आज मुझे महसूस हो रहा था कि जैसे बच्चे को किसी बात के लिए सहमत कराना आसान नहीं होता, वैसे ही बुजुर्ग से भी अपनी बात मनवाना आसान नहीं ।

‘न, छोरी मैं तो न जाने वाली ।’ उन्होंने मुँह फेर लिया ।

मैंने इन्हें ‘माँ’ को मनाने का इशारा किया — ‘माँ जी, मैं हूँ न, अगर शहर पसन्द न आया, तो ऐसे ही छोड़ जाऊँगा जैसे लेकर जा रहा हूँ ।’

पहली बार माँ थोड़ा नरम पड़ती दिखाई दी — ‘देखो, दामाद जी थारी बात तो मैं मोड़ न सकूँ सू... पर आप भी अपनी बात का मान रखियो, जब मैं कहूँ तबे छोड़ के जाणा होगा..... हाँ ।’





‘ठीक, जब आप कहोगी, छोड़ कर जाऊँगा ।’ तब कहीं जा कर माँ मुम्बई आने के लिये तैयार हुई थी ।

मैं जानती हूँ, माँ का मन अभी तक हमारे घर में नहीं लग पाया था । मैं कोशिश भी करती हूँ, लेकिन मुझे मालूम है कि हम तीनों की सोच अलग-अलग है, जिन्दगी को जीने की । दीपू को मोबाईल और कंप्यूटर से फुर्सत नहीं । वह तो घर हो कर भी घर नहीं होता । पढ़ाई करता रहेगा या फिर मोबाईल पर दोस्तों से गप्पे । या फिर कंप्यूटर, उसे नानी माँ से कुछ लेना-देना नहीं । कहो तो बोलेगा नानी माँ अभी यहीं तो हैं, कर लूँगा बात, अभी बहुत इम्पोर्टेन्ट काम कर रहा हूँ । मम्मी प्लीज, अभी डिस्टर्ब मत करो ।

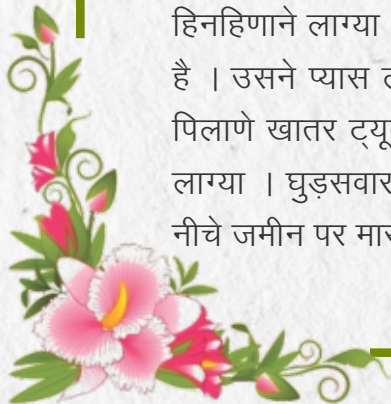
इनका तो कहना ही क्या ? मेरा मन रखने के लिए माँ को ले तो आए पर समय ? समय कहाँ इनके पास ? ऑफिस से लेट आ कर बात करने का मन नहीं करता । माँ का सोने का समय हो जाता है । माँ भी कई बार शिकायत कर चुकी है ।

‘अरी छोरी यहाँ तो मेरे साथ कोई बोले ही ना है, सारा दिन घर यूँ ही पड़ी रहूँ हूँ । मेरी तो किसी को परवाह ही न है ।’

परन्तु मैं क्या करूँ ? कितनी बार दोनों को समझा चुकी हूँ कि माँ का दिल रखने के लिए थोड़ी बातचीत कर लिया करो परन्तु सब व्यर्थ । इतना ही नहीं माँ को हर बात पे टोकने में दोनों कोई अवसर नहीं चूकते । वैसे ये लोग भी अपनी जगह ठीक होते हैं, परन्तु माँ को यूँ लगता है जैसे हमें उनकी परवाह नहीं है और कुछ ही दिनों में हम लोग उनसे बोर हो गए हैं ।

अभी दस दिन पहले की ही बात है जब हम माँ को लेने के लिये गाँव गये थे । हमारी गाड़ी जैसे ही हमारे घर के गेट के सामने खड़ी हुई, माँ की आवाज सुनाई दी । देखा तो, माँ पन्द्रह-बीस औरतों को कथा सुना रही थी । मैंने इन्हें संकेत से गाड़ी से न उतरने को कहा । माँ की आवाज काफी उँची थी । बचपन मैं जब कभी हमें माँ को ढूँढ़ना होता था तो हम गाँव की गली में खड़ी हो जाते थे । माँ जिस किसी के घर में होती थी हमें माँ की आवाज सुनाई दे जाती थी और हम माँ तक पहुँच जाते थे ।

माँ की आवाज हमें साफ सुनाई दे रही थी — ‘एक घुड़सवार खेतां के रास्ते ते अपनी मंजिल की तरफ जावे था । उसका घोड़ा अकदम तै ठिठक गया । पैर ऊपर उठाकर जोर-जोर ते हिनहिणाने लाग्या । घुड़सवार समझ गया कि घोड़े ने सामने ट्यूबवेल के बहते पाणी को देख लिया है । उसने प्यास लागी है, और वह पाणी पीणा चाहवे है । घुड़सवार नीचे उतर कै घोड़े ते पाणी पिलाणे खातर ट्यूबवेल के पास ले गया पर जैसे-जैसे घोड़ा पाणी के पास पहुँचै था । यह डरण लाग्या । घुड़सवार ने कोशिश की, पर घोड़ा अड़ग्या । वो डरग्या था । अपने पैर उप्पर उठाकर नीचे जमीन पर मारण लाग्या कुछ सोचण के बाद घुड़सवार समझ गया कि इंजन की जो जोर-जोर





तै ठक ठक... की आवाज आवे सै, उसे ते घोड़ा डरै सै, इसलिये पाणी नहीं पी रहा । घोड़ा पीछे भी ना हटै था । इसका मतलब यह था कि घोड़ा पाणी भी पीणा चाहवे है और डरै भी है ।’

घुड़सवार ने ट्यूबवेल के मालिक से कहा — ‘भाई जरा इंजन बन्द कर दो, इसकी ठक... ठक की जोर की आवाज तै मेरा घोड़ा डरै है । पाणी ना पी रहा । इसनै प्यास भी लाग्यी है ।

‘अरे भाई, जो मैं यूं इंजन बन्द कर द्यूंगा तो तेरा घोड़ा के, कोई भी पाणी कोना पी सकेगा । ट्यूबवेल ही बन्द हो जागा । जै तेरे घोड़े ने पाणी पीणा सै तो ठक... ठक.... की आवाज तो सहणी पड़ेगी । ठक... ठक.... आवाज के साथ ही पाणी पीणा पड़ेगा ।’ घुड़सवार सोच में पड़ गया ।

मेरी बहनों सोच थम भी लो । अगर ते राम का नाम लेणा से तो दुनियादारी की ठक... ठक... का शोर ते सुणते होए लेणा पेणागा । यू ठक.... ठक... का शोर ते कदे बन्द न होगा जिन्दगी भर चलता रहेगा । कदे अपने बच्चां की कदे बच्चों के बच्चां की । ये ता चलती ही रहेगी । वा देखो मेरी ठक... ठक भी आगी । मने देख ली थी.... परन्तु मने सोचया जै मैं ही बीच में छोड़कै चली जांगी तो थाम के सोचेगी । चलो बहनों अच्छा राम... राम । मैं देखूँ आपणी ठक.... ठक..... ने । पर तम भी ठक ठक... सुणती रहियो । डरियो मति । और पाणी पीती रही ओ । आई समझ मैं ।’ माँ को तो बस ऐसा माहौल पसंद है ।

हमारा जीवन बिल्कुल भिन्न । घर का सामान इधर से उधर हो जाये तो एक-दूसरे को टोकते रहेंगे यह बुक यहाँ ड्राइंग रूम में क्या कर रही है? दीपू इसे अपने रूम में रखो तुम हमेशा ऐसा ही करते हो, तुम नहीं सुधरोगे । इसे बेड रूम में रखो ओ हो, ये कभी समझेंगे नहीं, इनकी टाई तो हमेशा डाईनिंग टेबल पर ही मिलेगी । बस इसी आदत का शिकार मैंने माँ को भी टोक दिया । हाँलांकि मेरी मंशा माँ को नीचा दिखाने की कतई नहीं थी ।

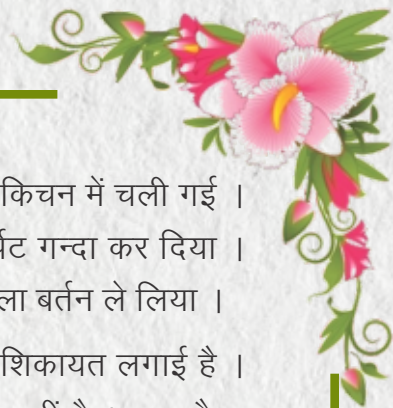
‘अरे माँ, यह क्या कर दिया? सारा कारपेट गन्दा कर दिया आपने ।’ मैं जैसे ही किचन से ड्राइंग रूम में आई, देखा कि माँ ने सब्जी छिलते हुए छिलके कार्पेट पर फेंक दिये । मैंने जल्दी से किचन में जाकर एक बर्तन लाकर माँ को दिया ताकि माँ छिलके उस में डाल सके ।

‘अरी..... क्या हो गया छौरी । इतनी परेशान क्यों हो गई । छिलके ही तो हैं, मैंने पहले कभी सब्जी ना काटी । हम तो गांव में ऐसे की काटे हैं, बाद में कर दूंगी साफ ।’ माँ ने बड़ी बेफिक्री से कहा और सब्जी काटनी जारी रखी ।

मैंने माँ को कई बार समझाया भी था कि छिलके नीचे मत फेंका करो, छिलके डालने के लिए कोई बर्तन या बर्तन या कपड़ा रख लिया करो । परन्तु माँ अपनी आदतें बदलने के लिये तैयार ही नहीं । मैंने तो यहाँ तक भी कह दिया था कि — ‘माँ आपको कोई भी काम करने की जरूरत ना है । आप तो बस मुझे काम बता दिया करो । मैं कर दूंगी ।

‘ना छोरी ये तो ना हो सके, काम के बिना मैं तो ना रह सकूँ ।’ माँ का उत्तर था ।





मेरी किस्मत देखो कि जैसे ही मैंने छिलको के बारे में माँ को टोका और अन्दर किचन में चली गई । तभी 'ये' बाहर ड्राईंग रूम में आ गये — 'अरे माँ ये क्या कर दिया । सारा कार्पेट गन्दा कर दिया । रश्मि, रश्मि देखो, माँ ने क्या कर दिया । माँ आप रहने दो ।' इन्होंने सब्जी वाला बर्तन ले लिया ।

बस, माँ बहुत ही गुस्सा हो गई । माँ को लगा जैसे मैंने उन्हें इस बारे में शिकायत लगाई है । बस धमकी देने लगी गाँव वापिस जाने की । मैंने बहुत समझाया कि ऐसा कुछ नहीं है । आप जैसा करना चाहती हैं वैसा ही करो, हम नहीं रोकेंगे । लेकिन माँ का पारा जैसे सातवें आसमान पर था ।

'अरी छोरी, मेरी तो टिकट कटा दे बस । बड़ा तो बड़ा वो छोटा भी कम न है । उस दिन कपड़े क्या धो दिये आसमान सर पे उठा लिया । थारा की काम करूँ सून अपना ना ।' माँ रूँआसी हो कर बोल रही थी उनका गला रुंध—सा गया था ।

एक के बाद एक ऐसी कुछ बातें हो गई थी जो माँ के स्वाभिमान पर चोट कर गई थी । कल ही दीपू के धुले हुये कपड़े माँ ने ये समझ कर धो दिये कि मैले हैं परन्तु दीपू ने जो कोहराम मचाया कि मैं हैरान रह गई । कभी दीपू को समझाती तो कभी माँ को । माँ ने दीपू से माफी मांगी चूँकि दीपू को वही कपड़े पहन कर जाने थे तो उसका मूड सारा दिन ऑफ रहा । माँ से बात भी नहीं कर रहा था ।

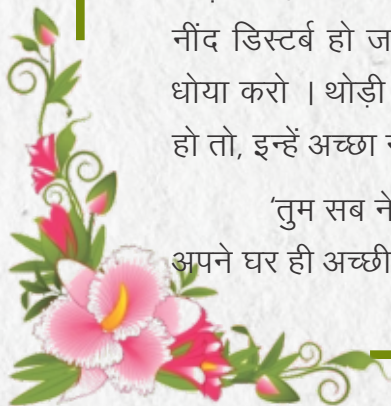
हाँ, उससे पहले भी दो—तीन दिन से दीपू और माँ की तू—तू मैं—मैं हो रही थी । माँ प्रत्येक बात पर दीपू को टोकती जो रहती थी ।

'मम्मी, नानी माँ को कह दो सुबह जल्दी उठना है तो ऊँचे— ऊँचे भजन ना बोला करे ।'

'क्यों ना लू राम का नाम? अरी छोरी समझा इसको, सुबह जल्दी उठ कर सैर किया करे । ये आजकल के छोरे पता नहीं क्या करे हैं, रातभर सोवे ना है और सुबह उठे ना हैं मने तो अच्छा ना लागे ये सब..... ।'

माँ का नियम था कि सुबह जल्दी उठकर ऊँची ऊँची आवाज में भजन करना माँ की आवाज इतनी उँची थी की सारी सोसाइटी सुन ले धूप बती करनी, आरती करनी कम से कम एक घंटे का समय तो लगाती थी और इस दौरान दीपू और इनका जो हाल होता है वह मैं जी जानती हूँ । और फिर बर्तन साफ करने । बर्तनों की आवाज से दीपू को तो चिढ़ थी ही इन्हें भी बहुत चिढ़ थी । और माँ का बर्तन साफ करने का ढंग ऐसा था कि बर्तनों की आवाज बहुत आती थी । नींद डिस्टर्ब हो जाती थी । इसलिए मैंने माँ को डरते—डरते एक दिन कहा — 'माँ तुम बर्तन मत धोया करो । थोड़ी देर बाद कामवाली तो आ ही जाती है । तुम बर्तन साफ करती हो.... कपड़े धोती हो तो, इन्हें अच्छा नहीं लगता ।'

'तुम सब ने तो मेरे हर काम पे रोक लगा देनी है । यूँ तो मैं निठठली हो जाऊँगी इससे तो मैं अपने घर ही अच्छी थी ।'





प्रतिदिन परेशानी बढ़ती जा रही थी । एक-दूसरे के प्रति कड़वाहट बढ़ रही थी और अब अब यह सब कुछ घटित हो गया था । जिसमें कसूरवार कोई नहीं था अपितु जेनरेशन गैप था । माँ आज को अपना को तैयार नहीं और हम कल से निकलकर आज में जीवन जीने के आदि हो गये हैं ।

मन की गति इतनी तेज होती है कि चंद लम्हों में ही न जाने कितना कुछ सोच लेता है । किसी ने ठीक ही कहा है, 'मन आँख के पलक झपकने जितने समय में पूरे जीवन भर की बातें सोच सकता है ।'

अब जब थोड़ा होश-हवास में आई तो विचार आया, क्यों ना इनको फोन करके बताऊँ तभी बेल बजी, सोचा माँ होगी – माँ परन्तु माँ नहीं थी ।

'क्या हुआ रश्मि तुम इतनी डरी सहमी सी क्यों हो ?'

'माँ?'

'क्या हुआ माँ को?' कहाँ है माँ ?

मैंने सारी बात इन्हें बताई एक बार तो यह परेशान हो गए लेकिन अगले ही पल इन्होंने फैंसला लिया कि पुलिस को शिकायत की जाये ।

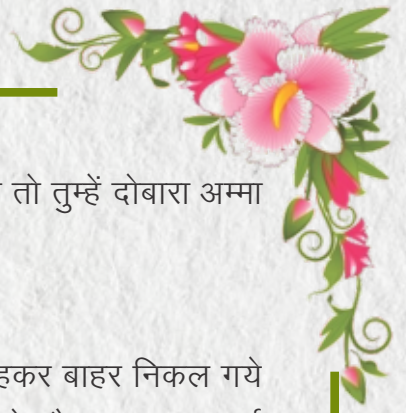
पहले आना-कानी और फिर ढेरों सवाल जवाब करने के पश्चात पुलिस वालों ने सुझाव दिया कि पहले अपने रिश्तेदारों और गांव में पता करें कि वहां तो नहीं चली गई माँ । अड़तालीस घंटों से पहले तो वे डीडीआर भी नहीं लिखते मिसिंग की, यदि किसी बड़ी घटना का अंदेशा सबूत ना हो तो । अब उन्हें कौन समझाता कि माँ को ना तो गांव लौटाने के लिए बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन की जानकारी थी और ना ही घर में कुछ इस प्रकार का घटित हुआ था कि माँ इस तरह बिना बताए कहीं जाए । उन्हें गांव जाना ही होता तो वे आसानी से अपनी गांव लौटने की जिद मनवा सकती थी । अगर एक बात पर वे अड़ जाती तो उसे पूरी करवा कर ही दम लेती थी यह बात हमें पता थी । लौटते हुए हम दोनों ही निःशब्द थे । दोनों ही खुद को अपराधी महसूस कर रहे थे । सोच रहे थे कि क्यों माँ को छोटी-छोटी बातों के लिए टोका । उन्होंने कौन-सा हमेशा के लिए साथ रहना था । दो-तीन महीनों बाद तो वो वैसे भी चली जाती ।

घर पहुंचे तो दीपू दरवाजे पर खड़ा मिला । हम दोनों के साथ माँ को ना देख कर उसका भी पहला प्रश्न यही था –

'अम्मा कहाँ है ?'

मैं बिफर पड़ी और अंदर का सारा आक्रोश दीपू पर निकाल दिया । 'तूने ही हंगामा किया था न, अम्मा के कपड़े धोने पर ?' इन्होंने बीच-बचाव किया तो वो गुस्सा इन पर भी निकल गया ।





‘जब मैंने एक बार इस प्रकार अम्मा को सब्जी काटने पर टोक दिया था तो तुम्हें दोबारा अम्मा को टोकने की क्या जरूरत थी?’

फिर आत्मग्लानि के अतिरेक में फूट-फूट रो दी ।

दीपू और ये मुझे सांत्वना देने की स्थिति में भी नहीं थे । दोनों ही ये कहकर बाहर निकल गये कि वे आसपास देखकर आते हैं । कहीं मंदिर या पार्क में जाने के लिए निकली हो और रास्ता भूल गई हो ।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं को कहां ढूँढ़ूँ ? मुम्बई शहर का कल्चर ही ये नहीं है कि आस-पड़ोस में जाकर आप कहीं बैठ सकें । और माँ को तो कोई जानता ही नहीं है, तो कोई भी उन्हें घर में घुसने ही नहीं देगा और माँ किसी के यहां कहीं जाएगी ही नहीं ? यहां आसपास कोई मन्दिर भी नहीं है पार्क भी काफी दूर है तो माँ के लिए पैदल इतनी दूर जाना संभव नहीं है । ऑटो रिक्शा वह कर सकती है पर ऑटो वाले को पता कौन से मंदिर का बताएंगी । ऑटो वाला तो पूछेगा – कौन से मंदिर जाना है ? ढेरों प्रश्न मन में आ रहे थे और उनके उत्तर भी खुद ही दिए जा रही थी । फिर अचानक मन में कौंध कि जब हम पुलिस स्टेशन गए थे तब वाचमैन गेट पर नहीं था । लौटते हुए भी वो नहीं दिखा तो हम उससे पूछना ही भूल गए । अगर माँ सोसायटी के बाहर निकली होगी तो उसने जरूर देखा होगा ।

आशा की एक किरण मन में कौंधी –

‘हां, उससे पूछा जाए । जरूर उसे कुछ पता होगा ’

गेट पर पहुंची तो वाचमैन गेट की पीली-पीली उदास जली बत्तियों के बीच रजिस्टर में झांकता मिला । मेरे पूछने से पहले ही वह पूछ बैठा –

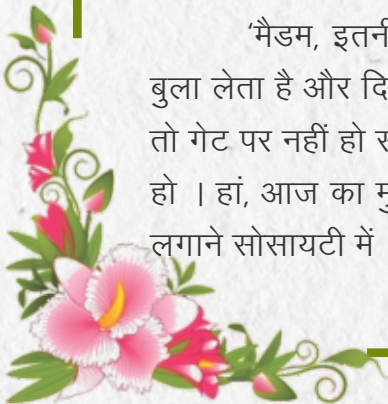
‘ अम्मा मिली ?’

‘ नहीं, कुछ पता नहीं चल रहा ’ । मैंने रुआंसे होते हुए उत्तर दिया ।

‘साहब ने ही बताया अभी कुछ देर पहले कि अम्मा कहीं चली गई हैं पर मैंने उन्हें जाते हुए नहीं देखा ।’

‘तुम गेट पर हमेशा रहते ही कब हो? जो उन्हें जाते हुए देखते?’ मैंने तैश में जवाब दिया ।

‘मैडम, इतनी बड़ी सोसाइटी है, कभी कोई किसी काम से, मेंटेनेंस की शिकायत नोट कराने बुला लेता है और दिन में दो-तीन बार पूरी सोसायटी में घूम कर भी तो मुझे देखना होता है तो हमेशा तो गेट पर नहीं हो सकता । गेट को बंद करके भी नहीं जा सकता कि आने जाने वाले को परेशानी ना हो । हां, आज का मुझे याद है पाँच से छह बजे के बीच में दस मिनट के लिए गेट से गया हूँ चक्कर लगाने सोसायटी में । इसके अलावा कहीं नहीं गया । इन दस मिनटों में ही अगर वो बाहर निकल गई





हों तो कह नहीं सकता ।’

मैं सोचने लगी कि मेरे फ्लैट से गेट तक पहुंचने में भी माँ को कम से कम पाँच मिनट लगेंगे क्योंकि वो बहुत धीरे-धीरे चलती हैं । अगर ये वाचमैन केवल दस मिनट के लिए ही गया है तो सिर्फ वो पाँच मिनट ही रहे होंगे जिनमें माँ बाहर निकल गई । या माँ सोसायटी के बाहर गई ही नहीं ? सोसायटी में ही है ? क्या दूसरे फ्लैट में किसी के घर बैठी हैं ? पर यदि किसी दूसरे के घर गई भी होती तो क्या उसे नहीं पता कि हम सब इस समय तक आ जाते हैं ? क्या वो मेजबान ही याद नहीं दिला देता कि आपकी बेटी-दामाद आ गये होंगे, अब आप जाओ । उन्हें चिंता होगी । ढेरों प्रश्न दिमाग में कौंधने लगे । ‘क्या कहीं कोई अनहोनी तो नहीं हो गई माँ के साथ ?’ – मैंने लौटते हुए लिफ्ट में घुसते हुए सोचा । माँ के कानों में सोने की बालियाँ और हाथों में सोने की चूड़ियाँ तो हैं ही । हम कहां जानते हैं सारे फ्लैट वालों को । दस मंजिली इस इमारत में लगभग एक सौ बीस फ्लैट है । हो सकता है, कोई अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति इसी इमारत की किसी और मंजिल पर रहता हो जिसने ये ‘रेकी’ कर रखी हो कि पूरे दोपहर ये बूढ़ी औरत घर में अकेली रहती है और कम से कम लाख का सोना तो पहने ही रहती है । सोचते ही डर की एक लहर सी दिमाग से होते हुए पूरे शरीर में दौड़ गई ।

मेरा फ्लैट चौथी मंजिल पर है । लेकिन जब लिफ्ट रुकी तो मैंने देखा कि मैं दसवीं मंजिल पर हूँ । मतिभ्रम की स्थिति में ही मैं लिफ्ट से बाहर निकल आई । जब तक समझ पाऊँ – लिफ्ट बंद होकर नीचे की ओर सरक गई । मैंने लिफ्ट काल का बटन दबाया और लिफ्ट के आने का इंतजार करने लगी । इस फ्लोर पर मैं कभी नहीं आई थी, जबकि दो साल से हम यहां हैं सारे फ्लैट्स के दरवाजे बंद थे । जहां फ्लैट्स की कतारें खत्म होती थी वहां सीढ़ियाँ थी । शायद छत पर जाने के लिए बनी थी । सारे फ्लैट के ‘ओवरहेड’ छत पर ही थे जो नीचे से दिखाई देते थे । अचानक ही मन में आया कि सीढ़ियाँ चढ़कर छत पर जाकर देखूँकहीं से गलती से अम्मा मेरी तरह ही लिफ्ट से ऊपर यहां तक तो नहीं आ गई । मैं सीढ़ियाँ चढ़कर छत पर आ आई । कतारों में छत पर वाटर टैंक रखे हुए हैं । ऊपर लाइट की कोई व्यवस्था ना होने से अंधेरा था । लेकिन चांदनी रात होने से इतना अवश्य दिखाई दे रहा था कि आसानी से चल सकूँ और चीजों को पहचान सकूँ ।

अचानक मेरी नजर छत पर बनी पत्थर की बेंच पर बैठी एक आकृति पर पड़ी –

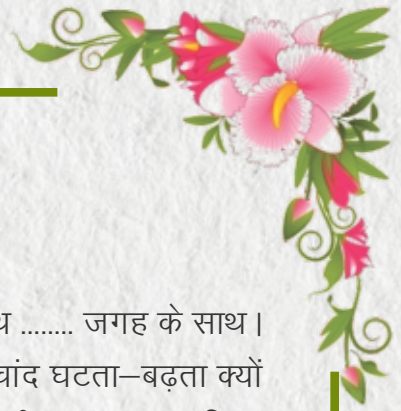
‘अम्मा’ मैं चीख पड़ी –

तुम यहां क्या कर रही हो? कब से बैठी हो यहां ?’

अम्मा कुछ नहीं बोली जैसे किसी दूसरी दुनिया में हो । ‘चलो, नीचे चलो’ – मैंने उन्हें कंधे से पकड़ कर उठाया । वो जैसे नींद से जागी – ‘अरे इतनी रात हो गई ? बहुत दिनों के बाद ये चांद-सितारे आसमान दिखो है बेटी, जब गांव में थी तब ।’

मेरी सांस में सांस आई । जैसे मुझे दुनिया की सारी दौलत मिल गई हो और अब मुझे किसी





प्रकार का काम—काज करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है ।

‘हां अम्मा’, मैं वहीं बैठ गई —

‘ये चांद सितारे आसमान तो वही हैं, बस हम बदल जाते हैं । उम्र के साथ जगह के साथ । जब मैं गांव में थी तो पता है अम्मा तुमसे पूछा करती थी ये तारे कितने हैं ? चांद घटता—बढ़ता क्यों है ? और तुम हमेशा टाल जाया करती थी मुझे कौन सी गिनती आवे है पूरी, जब तू पढ़—लिख जावे तो गिन लियो कितने तारे हैं । और अम्मा पढ़—लिख तो मैं गई । गिनती भी सीख गई पर तारे गिनना भूल गई । कभी मन में आया ही नहीं कि खुले आसमान के नीचे रात की चांदनी में बैठ कर तारे गिनुं और फिर तुम्हें बताऊँ इतने तारे हैं इतने सारे ।’ मैंने अपनी दोनों बाजू फैला कर अम्मा को बताया और उन्हें अपने अंक में भर लिया । वो एक गठरी की तरह मेरी दोनों बांहों में समा गई । ‘तुझे पता है, बचपन में तुझे अंधेरे से बहुत डर लगता था तब भी तू मुझे इसी तरह बांहों में भर लेती थी ?’ — अम्मा पुरानी यादों की गलियों में भटकने लगी । मैं भावुक हो उठी — ‘डर तो अम्मा, अब भी बहुत लगता है, इसी तरह तुम्हारी बांहों में सिमटी रहूँ ।’ अम्मा ने अपनी दोनों बाजुओं में मुझे और कस लिया — ‘तो बैठा तो कर मेरे पास बचपन में तो मेरा पल्लू ही नहीं छोड़ती थी ।’

‘हां, बैठा करो अम्मा के पास तुम’ — ये भी मुझे तलाशते हुए ऊपर आ गए ।

‘और हम बाप—बेटे तुम दोनों माँ—बेटी को पूरे शहर में ढूंढते फिर रहे हैं ।’ फिर अम्मा के पास बैठते हुए बोले —

‘बताओ अम्मा, कितने तारे गिने ? शाम से बैठी हो यहां रात होने आई ।’

‘या तो जीवन की साँझ है दामाद जी, पता नहीं कितनी लम्बी चालेगी पर मने तो लागे है अब तो बस जल्दी ही रात हो जावेगी और पता नहीं कब आँखे मुंद जावेगी और फिर जीवन का सवेरा ना देख सकूंगी ।’



बीस कदम



अनिल कुमार शर्मा

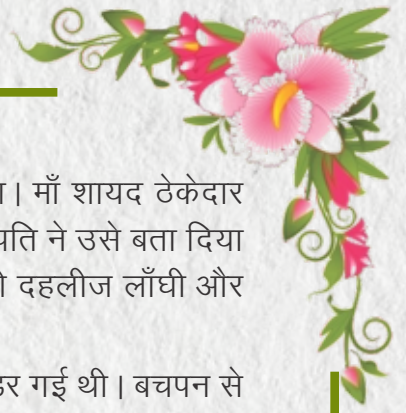
डर या भय, ऐसी मनोवृत्ति हैं, जिससे हम जितना पीछा छुड़ाना चाहें वह और ज्यादा तीव्रता से हमारे सम्पूर्ण व्यक्तित्व और मनोदशा पर कब्जा जमा लेती हैं। हम 'डर' से पीछा छुड़ा उससे दूर भागते हैं तो यह और ज्यादा पीछा करता है हमारा। हम कभी चीख कर, कभी निःशब्द, मौन हो कर इस डर से दूर भागते हैं और जब यह चरम पर होता है तो हम डर से परास्त होकर रुक जाते हैं सहमकर, निःशब्द और स्तब्ध। 'डर' से यह हमारी पहली मुलाकात होती है जब हम 'डर' की आँखों में आँखें डालकर पहली बार उसे देखते हैं। और बस यहीं हमें पता चलता है कि जिस 'डर' से डर कर हम भाग रहे थे वह डर हमारे पीछे नहीं हमारे अंदर ही था। कोई मतलब नहीं था उससे भागने का।

बचपन में ही मजदूर पिता की मौत के बाद रोज ही पूरे परिवार को भूख का डर सताता। एक वक्त का खाना अगर माँ जुटा देती तो खाते समय भी उसे यह डर सताता रहता कि कल जब फिर भूख लगेगी तो क्या होगा। कमसिन उम्र में जब पहला कदम रखा ही था तो तेजी से गदराते बदन से उसे डर लगने लगा क्योंकि हर उम्र का मर्द उसके जिस्म को आँखों से टटोलते हुए, हाथों से छूने के मौके तलाशने लगा था। माँ की नसीहतों ने उसके डर को कम करने की बजाय और बढ़ा दिया—“गरीब की जवान और सुंदर बेटी सुनसान में पड़े खुले कीमती सामान की तरह होती है जिसे हर कोई लूटना चाहता है”—माँ अक्सर उसे टोकती। मुहल्ले की औरतें जब उसके जवान होते सुंदर जिस्म को देखती तो उसकी माँ को समझाती—“भगवान गरीब की बेटी को इतना सुंदर भी न बनाये।”

तब वह खुद अपनी सुंदरता से डर जाती और पूरा प्रयास करती कि उसका जिस्म हमेशा इस कदर छुपा रहे कि किसी का उसकी सुंदरता पर ध्यान न जाये।

माँ का डर और आशंका भरी आँखों के दृष्टि घाव तब उसके जिस्म को छलनी-छलनी कर गये थे जब माँ ने डरी सहमी आवाज में उसे बताया था कि ठेकेदार ने उसे मजदूरी से हटा कर बोल दिया है कि कल से अपनी जगह अपनी बेटी को भेज। उसे नहीं पता था कि ठेकेदार और माँ के बीच क्या समझौता था जिससे माँ हाजरी लगाने और दो चार घंटे वहां गुजारने के एवज में भी उसकी माँ को सरकारी खाते से पूरी मजदूरी मिल जाती थी। लेकिन यह बताते हुए जब उसने अपनी माँ की आँखों में एक अनजाना सा डर देखा था तो वह समझ गई थी कि यह डर काम छूट जाने पर भूख से मरने और गरीबी का डर नहीं था। यह एक जवान, गरीब बेटी की माँ का डर था। इसी डर का परिणाम था एक बेहद अनमेल विवाह।

एक बदसूरत, बदमाश, बदनीयत और दूजिया पति जिसमें दुनिया भर के, ऐब थे और



जिसके अपने बच्चे तक उससे उम्र में बड़े थे, से उसका विवाह कर दिया गया। माँ शायद ठेकेदार द्वारा उसके देह शोषण का दोष खुद पर नहीं लेना चाहती थी। पहले दिन ही पति ने उसे बता दिया था कि अपनी पहली पत्नी को उसी ने खुद मारा था और यदि उसने भी घर की दहलीज लाँघी और इधर—उधर पंख मारे तो वह पंख नहीं सीधे गला कतर देगा।

पहली रात ही पति का हैवानियत भरा रूप देखकर वह बुरी तरह डर गई थी। बचपन से लेकर अब तक वह डर के साये में ही जीती रही थी। ये डर उसके व्यक्तित्व में इस कदर रच बस गये थे कि वह हमेशा डर से सहमी—सहमी नजर आती और उसकी आँखों में एक अनजाना खौफ हमेशा समाये रहता।

मात्र दो दिन ही बीते थे जब पति के जवान बेटे रघुवीर ने हाथ धोते उससे पूछा—“तू इतनी डरी—डरी क्यों रहती है?”। वह और डर गई थी। उसे कल ही दी गई पति की धमकी याद आ गई।

“तेरे साथ बहुत बुरा हुआ है। मेरा बाप अच्छा आदमी नहीं है”—उसके शब्दों में सहानुभूति थी—“पर डरने से कुछ नहीं होगा। डर के आगे ही जीत है”—उसने एक बार भरपूर नजरों से रघुवीर की ओर देखा। उसकी नजरों में सहानुभूति के साथ—साथ प्यार भी था। एक सर्द कबूतरी उसके अंदर पंख फैला कर उड़ान भरने को आतुर हो उठी।

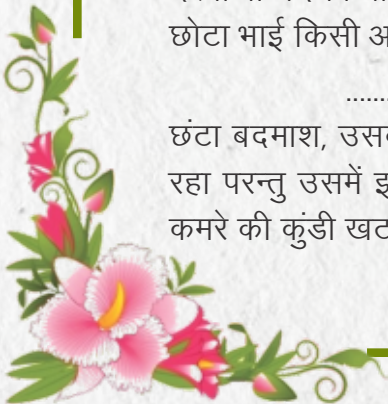
पहली बार उसे किसी ने डर से लड़ने के लिए प्रेरित किया था। पहली बार उसे लगा था कि उसकी सुंदरता निरर्थक नहीं है। मन में उपजा सच्चा प्रेम दुनिया के बड़े से बड़े डर को पराजित कर देता है। उसे लगा उसके मन और जिस्म में एक अजीब सी शक्ति का संचार हो रहा है।

उसी रात शराब के नशे में धुत पति जब एक बार फिर उसके कुंवारे जिस्म के सामने पराजित और नाकाम हो गया तो वह हिंसा पर उतर आया—“साली मुरदों की तरह पड़ी रहती है, बिल्कुल सहयोग नहीं करती”—उसने हैवानियत से उसके बालों को खींचते हुए थप्पड़ों की बरसात कर दी। उसने जीवन में पहली बार विरोध के स्वर में एक जोरदार चीख मारी और बिस्तर से खड़ी हो गई। दुबारा मारने के लिए उठा पति का हाथ उसने हवा में ही पकड़ा और एक जोरदार थप्पड़ उसे जड़ धक्का दिया तो वह दीवार से जा टकराया। चीख सुनकर आंगन के दूसरे छोर पर बने कमरों में सोए, रघुवीर और उसका छोटा भाई भी जाग गए।

उसने दरवाजा खोला। उसके कमरे और रघुवीर के कमरे के बीच बीस कदम का आँगन था। रघुवीर अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ा था।

बिना पीछे मुड़े, देखे वह रघुवीर के पास गई। उसकी कलाई पकड़ कमरे का दरवाजा बंद किया और उसके साथ उसके बिस्तर में घुस गई। दूसरे कमरे के दरवाजे पर खड़ा छोटा भाई किसी अनजानी आशंका से कांप उठा।

..... पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। किसी से न डरने वाला मुहल्ले का सबसे बड़ा छंटा बदमाश, उसका पति डरा—सहमा सा अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ा उसे जाते हुए देखता रहा परन्तु उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उस बीस कदम के आँगन को पार कर रघुवीर के कमरे की कुंडी खटखटा सके।



गज़लें



मनजीत शर्मा 'मीरा'

गज़ल-1

है आरजू के अपनी दुआ बे-असर न हो
दें जान जिनके वास्ते उनको ख़बर न हो

कितना मज़ा है इश्क़ के जुल्म-ओ-सितम में भी
ये रात ग़म की है ये कभी मुक्तसर न हो

चलते हैं चार गाम मुहब्बत की राह पर
उस इश्क़ का भी क्या मज़ा जो उम्र-भर न हो

हम इंतज़ार तेरा करेंगे वफ़ा तक
पर शर्त ये है और कोई मुंतज़िर न हो

फूलों पे चलके कहते हैं दुनिया ही जीत ली
उस जीत का भी क्या मज़ा जो बा-ख़तर न हो

तुमने मकान खूब बना, ज़मीन पर
क्या फायदा अगर किसी के दिल में घर न हो

मुदत हुई है यार से बिछुड़े हुए, हमें
वो इश्क़ क्या जहां कोई ज़ेर-ओ-ज़बर न हो

'मीरा' चलो कि इश्क़ को फिर से शुरू करें
चल दिल वहीं चलें जहां गम कारगर न हो

गज़ल-2

कभी दर्द-ए-दिल की सलीब पर कभी दिल के दार-ओ-मदार पर
जिए जा रहे तुझे ज़िंदगी तेरे झूठे कौल-ओ-क़रार पर

कभी धूप सी कभी छाँव सी है ये ज़िंदगी भी कमाल की
कभी गुलफिशानी का लुत्फ़ दे कभी पांव रख दे ये ख़ार पर

कोई वादा उसने किया नहीं रहूँ फिर भी उसकी ही मुंतज़िर
कभी दिल से दे जो सदा मुझे चली आऊँ एक पुकार पर

अभी रात ग़म की गई नहीं अभी सुबह की भी ख़बर नहीं
अरे ओ चराग़ न बुझ अभी मेरा दर्द-ए-दिल है उभार पर

कभी ये गिला कभी वो गिला मिला दर्द पर न सुकूँ मिला
मैं अकेला मरता रहा सनम तू भी रख तो सर कभी दार पर

तेरी खोई-खोई निगाह क्यों तेरा रंग रश्क-ए-सबाह क्यों
तुझे इश्क़ तो नहीं हो गया तेरी हर अदा है निखार पर

तेरी जुल्फ़ क्यों है बिखर गई तेरा रंग क्यों है उड़ा हुआ
तुझे क्या हुआ है सनम बता यहां कौन आया शिकार पर

यूँ लगे है सांस अटक गई कहीं जान-ए-जाँ तो नहीं मेरी
जरा देख तो सही रूह-ए-जाँ रो रहा है कौन मज़ार पर



गज़ल-3

आपसे गर मिला नहीं होता
प्यार क्या है पता नहीं होता

तुझ सा गर दिलरुबा नहीं होता
इश्क मेरा खुदा नहीं होता

रहमतें प्यार की नहीं मिलतीं
गर मेरा सर झुका नहीं होता

आप गर मेहरबाँ नहीं होते
कोई वादा-वफ़ा नहीं होता

जब वो मेरे करीब होते हैं
दिल मेरा पार सा नहीं होता

डूबकर ही किनारा मिलता है
इश्क का नाखुदा नहीं होता

जो न मुमताज़ चाहती हमको
प्यार का मकबरा नहीं होता

हाय जिसने मुझे तबाह किया
वो ही दिल से जुदा नहीं होता

इश्क की इब्दिता में ही था मज़ा
अब कोई मोज़ ज़ा नहीं होता

उनसे 'मीरा' करे मुहब्बत क्यों
जिनसे अहद-ए-वफ़ा नहीं होता

गज़ल-4

ज़िंदगी में वो मुहब्बत का सिकंदर निकला
उसने पत्थर भी छुआ गर तो वो गैहर निकला

बर्ग-ए-गुल बिखरी हैं राहों में फिज़ा महकी है
कौन दिलदार मुहब्बत के सफ़र पर निकला

आज इस दिल में खलिशसी कोई महसूस हुई
आज महबूब मेरा घर से सँवर कर निकला

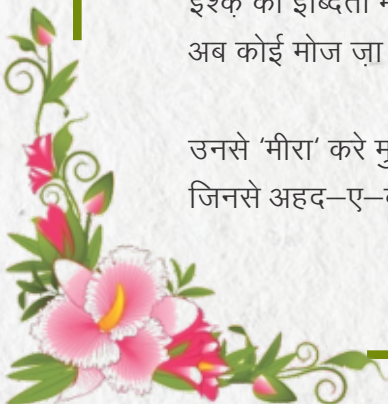
यूँ तो हर गहना मेरे यार पे फबता था मगर
जो बनाता था हसीं प्यार का ज़ेवर निकला

मैंने बस प्यार ही मांगा था वफ़ा के बदले
दे गया हिज़्र वो उम्मीद से बढ़कर निकला

मैं जिसे ढूँढती रहती थी पराय दर पर
वो सुकूँ जिसमें समाया था मेरा घर निकला

वो नदी प्यास बुझाकर भी रही मीठी ही
आब पीता रहा जो खारा समंदर निकला

अब रुलाएगा नहीं तर्क-ए-मुहब्बत 'मीरा'
दर्द इस बार मेरे ज़ेहन से डरकर निकला



हिन्दी की व्यथा



विनय कुमार गर्ग

हिन्दी अपनी व्यथा कहती है
हिन्द देश में दुःख सहती है
अपने पतन की गाथा खुद
संस्कृत जननी से कहती है
हिन्दी अपनी व्यथा

मैया मैं सँ इक श्रेष्ठ भाषा
फिर क्यूँ झेल रही हताशा
शब्द - व्याकरण वैज्ञानिक मेरे
फिर क्यूँ हिन्दी पीछे रहती है
हिन्दी अपनी व्यथा

जहाँ लगे जोगड़ा घर का जोगी
ओर आन गाँव का सिद्ध
ऐसी उपेक्षा हिन्दी हेतु भी
आहत मुझे कितना करती है
हिन्दी अपनी व्यथा

लाग - लगाव बेगानी भाषा से
निज भाषा से क्यूँ दुराव किया
भेदभाव अपनी भूमि पर
हिन्दी अस्तित्व को डरती है
हिन्दी अपनी व्यथा

सर्वोत्तम भावों की अभिव्यक्ति
होती निज भाषा हिन्दी में
सोच में हिन्दी, बात में हिन्दी
फिर काम में हिन्दी क्यूँ नहीं रहती है
हिन्दी अपनी व्यथा

प्रिया रही साहित्यकारों की
अब वो प्रीत कहाँ रहती है
नित खुले स्कूल अंग्रेजी भाषा के
हिन्दी सौतेलापन सहती है
हिन्दी अपनी व्यथा

बिहंसी जननी सुन व्यथा हिन्दी की
संस्कृत ने सुता को दुलार किया
हँस बोली ना हिय कर छोटा बेटी
जन - जन के मन में तू बसती है
हिन्दी अपनी व्यथा

ये ठेकेदार अंग्रेजी के भी
मन ही मन तुझसे डरते हैं
है गगन समान हिन्दी भाषा
जुग - जुग से धरा पर रहती है
हिन्दी अपनी व्यथा

है गूँज अंग्रेजी की क्षण - भंगुर
ना अहित तेरा कुछ होने वाला
नर कब तक ढोएगा पर - भाषा को
मातृभाषा चिरंजीवी रहती है
हिन्दी अपनी व्यथा

है बहुत तेरे चाहने वाले
बस कमी है इच्छा शक्ति की
है वनवास खत्म अब होने वाला
आवाज़ जगत की कहती है
हिन्दी अपनी व्यथा

कुदरत का कहर - कोरोना



नरेन्द्र बडगुज्जर

हवाओं में घुला है, यह कैसा जहर
सूने से गांव हैं, सूने पड़े शहर
घर बना है, अब कैदखाना
खुला है, केवल दवाखाना ।

शासन-प्रशासन ने, ये उक्ति सुझाई
घर पर रहो, इसमें है सबकी भलाई
वुहान शहर से, कैसी हवा है आई
तड़प-तड़प कर, सब मर रहे हैं भाई ।
देखो चीन आज बना शमशान
सोचो-समझो ना बनो नादान
अमेरिका, इटली और ईरान
लोंगों से भरे हैं, कब्रिस्तान ।
दुश्मन ऐसा, जो देता ना दिखाई
कैसे लड़ोगे, तुम इससे लड़ाई

अगर हराना है, इस दुश्मन को
घर में कैद कर लो, अपने जीवन को ।
जो तोड़ेगा, यह नियम बंधन
उसका परिवार करेगा क्रंदन
घर है, अपना सुंदर सलोना
घुसने ना दो, इसमें कोरोना ।
समस्त मानवता आज खतरे में है आई
कोरोना की नहीं बनी है, कोई दवाई
बात समझ लो तुम, यह जरा सी
मिलकर लड़ेंगे समस्त भारतवासी ।
कोरोना को जब हम हराएंगे
तभी हम विश्व विजेता कहलायेंगे ।

‘ सविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिये जाने के बाद
किसी को उसके विरुद्ध आवाज़ उठाने का अधिकार नहीं है ।

— कृष्णा मेनन

आज सुबह



राजेश कुमार शर्मा

आज सुबह इक पंछी बोला,
कहो कैसे हो, कहां रहे
तुम इतने दिन,
बोलो कैसे बीत रहे हैं,
अकेले में सारे निस दिन,
सूरज कैसे कब उगता है,
तारे लेते हो कितने गिन
चंदा क्या खूब चमकता है,
शोर वाहनों का कहीं नहीं,
कहीं नहीं धुएं के बादल,
सांसों पर भी बोझ नहीं,
आंखों से अब मैल का पर्दा
दूर हुआ कुछ छिपा नहीं,
रंग सभी तो चटक उठे हैं,
गंगा सद्य स्नातासी मुस्काए,
यमुना धरा को अब दुलराये,

हिम का आंचल चमक-चमक,
खिली फसल को देख लहराए,
प्रकृति के इस उत्सव को मानव
मना शांत हो, काहे पछताए,
याद कर तू माँ की डांट को,
बचपन में जब बुहारती आंगन को,
आज धरती बुहार रही जल थल वायु
कुछ दिन पांव समेट
मूंद आँख-झांक भीतर,
लेखा जोखा तोल मोल
निज कर्मों का कर ले,
मिला जो अवसर,
ज्ञान के मोती झोली भर ले ।

‘ हिन्दी का श्रृंगार राष्ट्र के सभी भागों के लोगों ने किया है,
वह हमारी राष्ट्र भाषा है । ’

हिन्दी हमारी मातृभाषा



पंकज अरोड़ा

संस्कृत से जन्मी, हिंद देश में पली-बढ़ी
मां का दर्जा ले, फिर क्यूँ है उदास खड़ी हिन्दी ।
संस्कृत से जन्मी, हिन्द देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यूँ है उदास खड़ी हिन्दी ।

निराशा को आशा में, दुख को खुशहाली में,
बदलना मेरा वादा है, प्रसारित करनी होगी हिन्दी ।
संस्कृत से जन्मी, हिन्द देश में पली-बढ़ी,
माँ का दर्जा ले, फिर क्यूँ है उदास खड़ी हिन्दी ।

हिन्दी मेरी भाषा है, आशा है, जिज्ञासा है, उत्थान है हिन्दी,
मीठी बोली, अद्भुत वाणी, बढ़ती प्रेम पिपासा है ।
संस्कृत से जन्मी, हिन्द देश में पली-बढ़ी,
माँ का दर्जा ले, फिर क्यूँ है उदास खड़ी हिन्दी ।

सुंदर, मनोरम, मीठी, सरल, ओजस्विनी है हिन्दी,
पाथेय, प्रवास परिचय का सूत्र, मैत्री की उत्कृष्टता है हिन्दी ।
संस्कृत से जन्मी, हिन्द देश में पली-बढ़ी,
मां का दर्जा ले, फिर क्यूँ है उदास खड़ी हिन्दी ।



साहित्य का असीम सागर है, शब्दकोष का भंडार है हिन्दी
सब भाषाओं की प्रिय भाषा है हिन्दी ।
संस्कृत से जन्मी, हिन्द देश में पली-बढ़ी,
माँ का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिन्दी ।

गागर में भर देती सागर, ना बैर, ना ईर्ष्या है,
ना नफरत जाने, अपनेपन से लुभाती हिन्दी ।
संस्कृत से जन्मी, हिन्द देश में पली-बढ़ी,
माँ का दर्जा ले, फिर क्यों है उदास खड़ी हिन्दी ।

माँ का दर्जा पा कर, वंदनीय हमारी हिन्दी,
राष्ट्र के माथे की बिंदिया है हिन्दी ।
संस्कृत से जन्मी, हिन्द देश में पली-बढ़ी
माँ का दर्जा ले, फिर भी है उदास खड़ी हिन्दी ।



जला अस्थियाँ बारी-बारी, चिटकाई जिनमें चिंगारी
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर, लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल !



मजदूर दिवस



मिनेश कुमार

निकले घर से
धुंधले सपने लेकर
दो रोटी के जाल में
जीवन गया फंस
बड़ा मजबूर सा है
यह मजदूर दिवस ॥

करना क्या है, पता नहीं
खाना क्या है, पता नहीं
कहां रहना और पाया क्या
पता नहीं, पता नहीं
समय भंवरा बड़ा जालिम
चूसे जीवन रस
बड़ा मजबूर सा है
यह मजदूर दिवस ॥

तसला फावड़ा
कुदाल और खेनी
चार चपाती, गुड़
बीड़ी और खैनी
मन बड़ा भारी
करें बातें हंस हंस

बड़ा मजबूर सा है
यह मजदूर दिवस ॥

गांव अपना और
बीबी बच्चों छूटे
आस लगाये
अम्मा बाबू छूटे
समय सरकता
पकड़े मुठ्ठी कस
बड़ा मजबूर सा है
यह मजदूर दिवस ॥

दिन अपने भी
बदलेंगे प्यारे
उम्मीदों का सूरज
निकलेगा प्यारे
पकड़ेंगे कभी तो
समय की नस
चाहे मजबूर सा है
यह मजदूर दिवस ॥

ख्वाबों की दौड़



दरवेश



लीक से हटकर चलेंगे तो जोखिम तो उठाने पड़ेंगे
पर एक बात तय है कि अफसोस नहीं होगा ।
'राही' जो होंगे खुद की वजह से होंगे,
किसी और को तेरी जीत-हार का दोष नहीं होगा ।

ख्वाबों की दौड़ है ही ऐसी,
खुद को तोड़ना पड़ता है, निचोड़ना पड़ता है ।
कोई इस में तेरा साथी नहीं बनता,
इस रस्ते अकेले ही दौड़ना पड़ता है ॥

इस डर से कभी पीछे भी ना हटना,
निकल तो गया हूँ घर से आगे क्या होगा ।

गर हार गया तो सारा जमाना सवाल करेगा
ताने मार-मार कर जीना मेरा हराम करेगा

ये बस्ती भेड़चाल वालों की है,
इनके सवालों से परेशान ना हो ।

क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे तेरे
बारे
ऐसे मन में कोई ख्याल ना हो ॥

जिनके खुद के ख्वाब नहीं, भला उनसे क्या डरना ।
अंधे क्या सोचेंगे आँख वालों के बारे से
सोच-सोच के क्या मरना ।

ये तेरा देश है, तेरी दुनिया है
तू बस लक्ष्य पर नज़र गाड़ और आगे बढ़
तेरी राह महफूज़ करता खुद खुदा होगा ।
तू बस झोला उठा और निकल पड़
आगे की परवाह ना कर,
आगे वही होगा जो मंज़ूर ए खुदा होगा ।

‘ निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल ’

राजभाषा हिन्दी का प्रगामी प्रयोग से संबंधित रिपोर्ट



अवनीश कुमार

सरकारी कामकाज की दृष्टि से प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का कार्यालय 'क' क्षेत्र में आता है परन्तु चण्डीगढ़ में स्थित होने के कारण यह 'ख' क्षेत्र में आता है। चण्डीगढ़ स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग में इस कार्यालय का अग्रणी स्थान है। हरियाणा एक हिन्दी भाषी प्रदेश है। अतः राजभाषा हिन्दी स्वभाविक रूप से प्रदेश की मुख्य सम्पर्क भाषा है। कार्यालय को शत-प्रतिशत अधिकारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है। राजभाषा हिन्दी को उसके गौरवशाली स्थान पर प्रतिष्ठित करने में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। पाँच वर्ष पूर्व के आंकड़े और वर्तमान स्थिति का आकलन यदि करें तो स्थिति संतोषप्रद नजर आती है और विश्वास बनता है कि प्रगति की दर यदि यही रही तो निश्चित ही शत-प्रतिशत के लक्ष्य को हम प्राप्त कर लेंगे।

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में कार्यालय में हुई प्रगति का आकलन करने हेतु सभी अनुभागों से तिमाही प्रतिवेदन प्राप्त कर उनकी समीक्षा की जाती है। पत्रिका के गत अंक में जून 2019 तक के प्रतिवेदनों की समीक्षा दी गई थी। इस बार 1 जुलाई 2019 से 30 सितम्बर 2020 तक के आंकड़ों पर आधारित हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के विवरण यहाँ दिए जा रहे हैं।

इस अवधि के दौरान 213739 पत्र हिन्दी में प्राप्त हुए। इनमें से सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए। इस प्रकार इस मद में शत-प्रतिशत लक्ष्य हासिल किया गया। इस अवधि में कुल 303738 पत्र जारी किए गए। इनमें से हिन्दी में कुल 294141 पत्र जारी किए गए।



इस अवधि में चार हिन्दी कार्यशालाओं जो 03 कार्यदिवसों की थी, का भी आयोजन किया गया । जिनमें 50 कर्मचारियों/अधिकारियों को सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया गया । कार्यशालाओं के अन्त में परीक्षा ली गई जिसमें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे प्रतिभागियों को उपहार देकर सम्मानित किया गया । कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा हेतु हर तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष प्रधान महालेखाकार महोदय हैं । इस अवधि में तीन तिमाही बैठकें आयोजित हुई जिनमें पिछली तिमाही के हिन्दी प्रतिवेदनों की समीक्षा तथा भविष्य में प्रगति हेतु उपायों पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया तथा विभिन्न सुझाव दिए गए । जिन शाखाओं/अनुभागों में हिन्दी के प्रयोग में कमी पाई गई उन शाखा अधिकारियों को प्रगति सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक सुझाव व निर्देश दिए गए ।

इस अवधि में 20 अनुभागों के अभिलेखों का निरीक्षण व जाँच की गई एवं निरीक्षण रिपोर्ट के माध्यम से पाई गई कमियों व त्रुटियों से उन्हें अवगत कराया गया ।



भाषा बिना व्यर्थ ही जात ईश्वरीय भी ज्ञान
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान ।
असंख्यक हैं इसके उपकार ।
करो अपनी भाषा से प्यार



खेल-कूद, साँस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियाँ

तरसेम कुमार



प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का कार्यालय एक उत्कृष्ट कार्यबल की पहचान बनाए हुए हैं। श्रेष्ठ कार्य निष्पादन में कार्यालय के कर्मचारियों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। इसे सुनिश्चित करने के लिए कार्यालय में कल्याण कक्ष की स्थापना की गई तथा खेलकूद एवं मनोरंजन क्लब भी सक्रिय है। सरकारी कामकाज में कार्य-कुशलता के उच्च मानदण्ड कायम रखने के उद्देश्य से कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की खेलकूद, साँस्कृतिक एवं सामुदायिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। 'नवकिरण' के गतांक के प्रकाशन के पश्चात् आयोजित विभिन्न गतिविधियों की एक झलक यहाँ प्रस्तुत है :-

1. 15 अगस्त, 2019 को कार्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर साँस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में अपर मुख्य सचिव, वित्त एवं योजना, हरियाणा उपस्थित थे।
2. 20.08.2019 को कार्यालय परिसर में सद्भावना दिवस का आयोजन किया गया था। कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर शपथ ग्रहण किया।
3. 28.10.2019 से 02.11.2019 तक कार्यालय परिसर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन किया गया था।
4. सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म तिथि के अवसर पर 31.10.2019 को कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय एकता दिवस का पालन किया गया था।
5. सरकारी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, सेक्टर-32, चण्डीगढ़ के साथ मिलकर दिनांक 07.11.2019 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया था। इस शिविर में दोनों कार्यालयों के कुल एक सौ एक (101) अधिकारियों/कर्मचारियों ने रक्तदान किया।
6. 01 जनवरी, 2020 को कार्यालय परिसर में नव वर्ष समारोह का आयोजन किया गया था।

- 
7. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राण न्यौछावर करने वाले स्वसंत्रता सेनानियों की याद में 30 जनवरी, 2020 को 2 मिनट मौन का पालन किया गया था।
 8. 21 मई, 2020 को कार्यालय परिसर में आतंकवाद विरोधी दिवस का पालन किया गया था। इस अवसर पर पूरे स्टाफ ने अपने स्थान पर खड़े होकर शपथ ग्रहण किया।
 9. 15 अगस्त, 2020 को कार्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया था। सुश्री नमिता सेंखों, भारत की उप-नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा ध्वजारोहण किया गया था। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। डॉ. आभा सरवाल, विभागाध्यक्ष, पेट्रोलोजी विभाग, जीएमसीएच, सेक्टर-16, चण्डीगढ़ इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं।
 10. 20.08.2020 को कार्यालय परिसर में सद्भावना दिवस का आयोजन किया गया था। कार्यालय के सभी स्टाफ ने अपने स्थान पर खड़े होकर शपथ ग्रहण किया।
 11. 28.10.2020 से 02.11.2020 तक कार्यालय परिसर में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का पालन किया गया था।
 12. सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म तिथि के अवसर पर 31.10.2020, (31.10.2020 एवं 01.11.2020 को छुट्टी थी) को कार्यालय परिसर में राष्ट्रीय एकता दिवस का पालन किया गया। कार्यालय के सभी स्टाफ ने 02.11.2020 को अपने स्थान पर खड़े होकर शपथ ग्रहण किया।
 13. सरकारी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल, सेक्टर-32, चण्डीगढ़ के साथ मिलकर दिनांक 21.10.2020 से 23.10.2020 तक कोविड जाँच शिविर का आयोजन किया गया था।
 14. दिनांक 06.01.2021 से 08.01.2021 तक भारतीय स्टेट बैंक, सेक्टर 34 द्वारा संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। सभी स्टाफ को जलपान परोसा गया था।



‘मेरा शीश नवा दो अपनी, चरण-धूल के तल में ।
देव! डुबा दो अहंकार सब, मेरे आँसू-जल में।’

— गीतांजली



रक्तदान शिविर 2020



कोविड जाँच शिविर 2020



स्वतंत्रता दिवस समारोह 2020



हिन्दी दिवस-2020 का प्रतिवेदन



संजीव कुमार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक) हरियाणा में दिनांक 14-09-2020 को हिंदी दिवस समारोह ऑनलाइन माध्यम से मनाया गया। औपचारिक रूप से प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर श्री संजीव कुमार, कनिष्ठ अनुवादक के द्वारा कार्यालय में हुई राजभाषा प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसमें यह विशेष उल्लेख किया गया कि कार्यालय में हिंदी के प्रयोग में पिछले वर्षों में विशेष प्रगति हुई है। इस अवसर श्री प्रेम शंकर, सहायक लेखा अधिकारी ने माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश पढ़ कर सुनाया।

समारोह में राजभाषा नीति के अनुसार गत वर्ष में 20000 से अधिक हिंदी के शब्दों का प्रयोग करने वाले 07 अधिकारियों/कर्मचारियों को उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया द्वारा नकद पुरस्कार के साथ उन्हें प्रमाण पत्र देकर भी सम्मानित किया गया। कार्यालय की 'नवकिरण' हिंदी पत्रिका के श्रेष्ठ तीन लेखकों को भी प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार स्वरूप नकद राशि तथा सम्मान स्वरूप प्रमाण पत्र दिए गए।

अंत में उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया ने अपने सम्बोधन में सभी कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए संदेश दिया। उन्होंने स्वयं भी राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। समारोह के अंत में श्री प्रमोद कुमार गुप्ता, लेखाकार ने प्रधान महालेखाकार महोदय एवं अन्य सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

सरकारी काम-काज में हिन्दी का प्रयोग-प्रोत्साहन योजना हेतु नकद पुरस्कार

क्रमांक	नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमति	पुरस्कार	राशि
1	राज कुमार, लेखाकार	प्रथम	5000
2	रंजीव कुमार सिंह, लेखाकार	प्रथम	5000
3	विनोद कुमार, वरि. लेखाकार	द्वितीय	3000
4	सोहन लाल, वरि. लेखाकार	द्वितीय	3000
5	मिनेश कुमार, लेखाकार	द्वितीय	3000
6	प्रशान्त कुमार, वरि. लेखाकार	तृतीय	2000
7	राधा कृष्ण, लेखाकार	तृतीय	2000

हिंदी पत्रिका नवकिरण के उत्कृष्ट लेखकों को नकद पुरस्कार।

क्रमांक	नाम व पदनाम सर्वश्री/श्रीमति	पुरस्कार	राशि
1	विनय कुमार गर्ग, स.ले.अ.(डेपुटेशन)	प्रथम	1200 / -
2	नरेन्द्र कुमार, वरि. लेखाकार	द्वितीय	1000 / -
3	अंकित कुमार ठाकुर, एमटीएस	तृतीय	800 / -

हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय



संजीव कुमार

अंतिम रूप	Final Touch	निरीक्षण	Inspection
अधिवेशन	Session	प्रस्तुत करना	to put up/to submit
अनापत्ति प्रमाण - पत्र	No Objection Certificate	प्रतिनियुक्ति	Deputation
अप्राधिकृत	Unauthorised	पदोन्नति	Promotion
अर्जित अवकाश	Earned leave	पदावनति	Demotion
अधिनियम	Act	पारपत्र	Passport
अवलोकन	Perusal	वेतन	Salary
अपेक्षित सूचना	Requisite Information	परिणत अवकाश	Commuted leave
अनुमति	Permission	प्रतिबंधित अवकाश	Restricted leave
अनुशासनिक कार्रवाई	Disciplinary Action	प्रतिपूरक अवकाश	Compensatory leave
अधीनस्थ	Subordinate	प्रसूति छुट्टी	Maternity leave
अग्रिम	Advance	प्रत्यावर्तन	Reversion
अभ्यावेदन	Representation	पारिश्रमिक	Remuneration
अल्प सूचना	Short Notice	प्रस्ताव	Proposal
अनुसंधान	Research	प्रतियोगिता	Competition
आवक	Inward	प्रतिलिपि सूचनार्थ	Copy for information
आयात	Import	पदों का सृजन	Creation of posts
आकस्मिक अवकाश	Casual Leave	बकाया काम	Pending work
आचरण संहिता	Conduct Rules / Code of Conduct	बरखास्त करना	To dismiss
आदेश	Order	भविष्य निधि	provident Fund
आरक्षण	Reservation	भुगतान	Payment
आयकर आयुक्त	Income Tax Commissioner	मूल प्रति	original copy
औपचारिकता	Formality	महंगाई भत्ता	Dearness Allowance
कार्रवाई	Action	मसौदा	Draft
कार्यालय पद्धति	Office Procedure	यात्रा कार्यक्रम	Tour Programme



कार्यालय प्रति	Office Copy	लेखा परीक्षा	Audit
कार्यवृत्त	Minutes	लोकहित	Public Interest
कार्यसूची	Agenda	लेखाकार	Accountant
खिलाफ / विरुद्ध	Against	वेतन - नियतन	Pay Fixation
गोपनीय	Confidential	वितरण	Distribution
गोष्ठी	Seminar	वार्षिक निरीक्षण	Annual Inspection
चेतावनी	Warning	विभागीय	Departmental
चर्चा	Discussion	वित्तीय अनुमोदन	Financial Approval
चयन	Selection	वार्षिक विवरण	Annual statement
चिकित्सा अवकाश	Medical Leave	शिकायत	Complaint
छुटनी	Retrenchment	स्थगित	Postpone
जावक	Outward	संगरोध छुट्टी	Quarantine
जाँच समिति	Enquiry Committee	सिफारिशें	Recommendations
तैनाती	Posting	सहमति	Concurrence
तदर्थ	Adhoc	संस्वीकृति	Sanction
दैनिक मजदूरी	Daily wages	समिति	Committee
नियुक्ति	Appointment	सूची	List
निष्पादन	Performance	सुझाव	Suggestion
निर्णय	Decision	स्वतः स्पष्ट टिप्पणी	Self explanatory note
निलंबित करना	To suspend	हस्ताक्षर	Signature
निपटान	Disposal	ऋण	Loan
निष्ठावान	Sincere		



राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में
हिन्दी और देवनागरी का प्रचार आवश्यक है ।

— लाला लाजपत राय



सेवानिवृत्ति



रंजीव कुमार

समय अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम इकट्ठे कार्य करते हैं। जिनका कार्यक्षमता और अनुभव से लाभान्वित होते हैं, उनके दूर जाने का अर्थात् सेवानिवृत्ति होने का समय आ ही जाता है। इस कार्यालय में उनके द्वारा दी गई सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं और उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख – समृद्धि की कामना करते हैं।

क्र.सं.	नाम श्री /श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
1.	जोगेश कुमार	व. लेखाकार	31.07.2019
2.	अनिता रानी मल्होत्रा	लेखा अधिकारी	31.08.2019
3.	राजशैली	व. लेखाकार	31.08.2019
4.	धर्म सिंह	लेखा अधिकारी	30.09.2019
5.	रश्मी कौशल	व. लेखाकार	30.09.2019
6.	भवानी शंकर शर्मा	व. लेखाकार	30.09.2019
7.	राज रानी	व. लेखा अधिकारी	31.10.2019
8.	रीटा मिश्रा	व. लेखाकार	31.10.2019
9.	श्याम रत्न	व. लेखा अधिकारी	30.11.2019
10.	मधु सूद	व. लेखाकार	31.12.2019
11.	सुच्चा सिंह	व. लेखाकार	31.12.2019
12.	अजमेर सिंह	व. लेखाकार	31.12.2019
13.	अरूण कुमार वशिष्ठ	सहा. लेखा अधिकारी	31.01.2020
14.	अनिता मेहता	पर्यवेक्षक	31.01.2020
15.	त्रिलोचन सिंह	व. लेखाकार	31.01.2020
16.	सुरजीत सिंह	व. लेखाकार	31.01.2020
17.	प्रताप सिंह	लेखाकार	31.01.2020
18.	जगदीश सिंह	व. लेखा अधिकारी	29.02.2020
19.	हरबंस सिंह	व. लेखा अधिकारी	29.02.2020
20.	प्रताप सिंह मेहरा	व. लेखा अधिकारी	29.02.2020
21.	जीत सिंह बाजवा	स. लेखा अधिकारी	29.02.2020
22.	अजित सिंह	स. लेखा अधिकारी	29.02.2020
23.	अजय कुमार पाठक	वरि. लेखाकार	29.02.2020
24.	पदम नाभ पांडे	वरि. लेखाकार	29.02.2020



क्र.सं.	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति तिथि
25.	रविन्द्र सिंह	वरि. लेखाकार	29.02.2020
26.	उमर सिंह भोरिया	वरि. लेखाकार	31.03.2020
27.	अनिल कपूर	पर्यवेक्षक	30.04.2020
28.	मनजीत सिंह	वरि. लेखाकार	30.04.2020
29.	जगदीश सिंह	वरि. लेखाकार	30.04.2020
30.	सरिता रानी	वरि. लेखाकार	30.04.2020
31.	हजार सिंह	वरि. लेखाकार	30.04.2020
32.	काकी कुमारी	वरि. लेखाकार	30.04.2020
33.	सोम नाथ	वरि. लेखा अधिकारी	31.05.2020
34.	गुरमीत सिंह	वरि. लेखाकार	31.05.2020
35.	ओम प्रकाश	सहा. लेखा अधिकारी	30.06.2020
36.	राजीव सूद	वरि. लेखा अधिकारी	31.07.2020
37.	गुरमीत सिंह भाटिया	वरि. लेखा अधिकारी	31.07.2020
38.	सुशील कुमार	वरि. लेखाकार	31.07.2020
39.	रणजीत सिंह	वरि. लेखाकार	31.07.2020
40.	जसविन्द्र सिंह	वरि. लेखाकार	31.08.2020
41.	राजेश कुमार शर्मा	वरि. लेखाकार	31.08.2020
42.	सुनीता शर्मा	वरि. लेखाकार	31.08.2020
43.	अजित कुमार हांडा	पर्यवेक्षक	30.09.2020

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

क्र.सं.	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति तिथि
1.	बनवारी लाल	पर्यवेक्षक	02.09.2019
2.	सुनीता चोपड़ा	वरि. लेखाकार	11.10.2019
3.	नीलम संतारीया	वरि. लेखाकार	02.01.2020
4.	रजनी कौल	वरि. लेखाकार	01.02.2020
5.	अरूण बाला	सहा. लेखा अधिकारी	15.07.2020
6.	मंजू महाजन	वरि. लेखा अधिकारी	31.07.2020
7.	नीलम रानी लीखा	वरि. लेखा अधिकारी	31.08.2020

श्रद्धांजलि

जब अचानक किसी साथी का हमसे किसी अदृश्य शक्ति द्वारा छीन लिया जाता है तो हमें विधि का विधान मानकर उसकी जुदाई की पीड़ा सहनी पड़ती है। अपने बिछुड़े हुए साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उस असीम शक्ति से हम उनकी आत्मा की शान्ति तथा विपदा की घड़ी में उनके प्रियजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

क्र.सं.	नाम श्री / श्रीमती	पदनाम	निधन की तिथि
1.	स्व श्री गौरव हंस	वरि. लेखाकार	09.09.2019
2.	स्व. श्री जूल जज	वरि. लेखाकार	02.12.2019
3.	स्व. श्री मंगल सिंह	एमटीएस	18.08.2020

भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान, सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान। असंख्यक हैं इसके उपकार
करो अपनी भाषा से प्यार ॥

सतर्कता, जागरूकता सप्ताह (शपथ समारोह)





महालेखाकार (लेखा व हकदारी) का कार्यालय, हरियाणा, चण्डीगढ़